RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

वर्ष : 13 | अंक : 6 | जयपुर | प्रकाशन तिथि : 5 अगस्त, 2025 | मूल्य : 20/- | पृष्ठ-40

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

स्व.श्री रामगोपाल गार्ड
प्रेरणा स्रोत

श्री कालूलाल गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री भौंरीलाल बागड़ी
प्रधान संरक्षक

श्री सरदारसिंह चेची
प्रधान संरक्षक

श्री अशोक गार्ड
प्रधान संरक्षक

श्री पुरुषोत्तम फागणा
प्रधान संरक्षक

श्री रतनलाल चेची
प्रधान संरक्षक

श्री पृथ्वीसिंह चौहान
प्रधान संरक्षक

रामलाल गुंजल
प्रधान संरक्षक

श्री घनश्याम तंवर
प्रधान संरक्षक

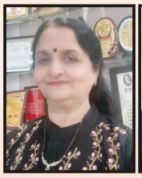
डॉ. दक्षा जोशी
प्रधान संरक्षक

डॉ. कुलदीप महुआ
प्रधान संरक्षक

श्री अमरसिंह धाभाई
प्रधान संरक्षक

श्री शैतान सिंह गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री गोपाल सिंह गुर्जर
प्रधान संरक्षक

तिलकराज बैंसला
प्रधान संरक्षक

कर्नल चौ. देवेन्द्र सिंह
प्रधान संरक्षक

श्री रामजीलाल गुर्जर पटवारी
प्रधान संरक्षक

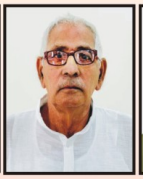
श्री इन्द्रराज विधूड़ी
प्रधान संरक्षक

श्री नानजीभाई गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री कन्हैयालाल सराधना
प्रधान संरक्षक

देव चेतना पत्रिका के प्रधान संरक्षक, मुख्य संरक्षक व सम्पादक मण्डल की ओर से सभी देशवासियों को राष्ट्रीय पर्व रक्षा बन्धन, स्वाधीनता दिवस, जन्माष्टमी एवं श्री गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएँ

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

श्री चन्द्रशेखर बसवा प्रधान संरक्षक | श्री अमरसिंह कसाना प्रधान संरक्षक | श्री गोपाल धाभाई प्रधान संरक्षक | श्री लक्ष्मणसिंह कसाना जयपुर- प्रधान संरक्षक | श्री ब्रह्मसिंह गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री शान्तिलाल गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री बुद्धाराम चाड़ प्रधान संरक्षक | श्री देवनारायण लटाला प्रधान संरक्षक | श्री पी.सी. अवाना प्रधान संरक्षक | महन्त श्री दयालनाथजी प्रधान संरक्षक

दामोदर गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री राजेश लोमोड़ एडवोकेट प्रधान संरक्षक | श्री विजय सिंह डोई प्रधान संरक्षक | डॉ. रेखासिंह गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री विजयसिंह कसाना प्रधान संरक्षक | श्री जगदीश रावत प्रधान संरक्षक | श्री चन्द्रभान अवाना प्रधान संरक्षक | श्री लखन पटेल प्रधान संरक्षक | मन्नालाल प्रधान कोटा प्रधान संरक्षक | श्री बाबूलाल छेपट प्रधान संरक्षक

श्री सुखराम गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री जगदीश गुर्जर प्रधान संरक्षक | डॉ. अमित सिंह प्रधान संरक्षक | श्री जगदीश भड़क प्रधान संरक्षक | इन्द्र चन्द गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री मनमोहन फागणा प्रधान संरक्षक | श्री कन्हैयालाल छावड़ी प्रधान संरक्षक | श्री नीरज पटेल प्रधान संरक्षक | श्री गोविन्द गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री सांवरलाल गुर्जर प्रधान संरक्षक

श्री चेतन गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री गौरीशंकर डोई प्रधान संरक्षक | चौ. शिवपाल सिंह प्रधान संरक्षक | विजयलाल सराधना प्रधान संरक्षक | श्री राजेन्द्र दौराता जयपुर- प्रधान संरक्षक | श्री अमरसिंह भगत मिलकपुर-प्रधान संरक्षक | सत्यनारायण सेठ दाबादेह, कोटा प्रधान संरक्षक | श्री शंकरलाल कसाना प्रधान संरक्षक | मेवाराम छावड़ी प्रधान संरक्षक | फूलचन्द चेलरवाल भैरुखेजड़ा, जयपुर प्रधान संरक्षक | बजरंग लाल गुर्जर जिलाध्यक्ष-झालावाड़ प्रधान संरक्षक

श्री जगजीतसिंह-स्व.श्रीमती चांद सिराधना प्रधान संरक्षक | श्री भंवरलाल गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री सूरतराम गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्रीमती सावित्री गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री फतेहसिंह चेची प्रधान संरक्षक | श्री धनराज गुर्जर चेयरमैन, प्रधान संरक्षक | हलवाई श्री घीसू गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री डी.एस. लोहमोड़ प्रधान संरक्षक | एडवोकेट बंशीधर गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री नानजी भाई गुर्जर प्रधान संरक्षक

श्रीमती मंजू धाभाई प्रधान संरक्षक | डॉ. बबीता सिंह प्रधान संरक्षक | श्री ओमप्रकाश गुर्जर प्रधान संरक्षक | श्री सुरेश गुर्जर, कोटा प्रधान संरक्षक | श्री रघुनाथ गुर्जर (केमरी) प्रधान संरक्षक | श्री रामस्वरूप सराधना प्रधान संरक्षक | श्री शांतिलाल (जिंदल) प्रधान संरक्षक | श्री ऋषिकेश गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री गोवर्धन लाल गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री भँवरलाल चौपड़ा मुख्य संरक्षक

श्री दयाराम गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री रामकरण कसाना मुख्य संरक्षक | श्री गौरव गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री मदनलाल गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री बुधराम गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री सुमेर सिंह मणकस मुख्य संरक्षक | श्री किशनलाल गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री रामकिशन गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री महावीर खटाणा मुख्य संरक्षक | श्री अर्जुनलाल बोकण मुख्य संरक्षक

महावीर गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री पी.डी. गुर्जर मुख्य संरक्षक | श्री खेमसिंह बैंसला मुख्य संरक्षक | श्री श्योजीराम बागड़ी (मोखमपुरा वाले) मुख्य संरक्षक | श्रीमती बन्नी देवी मुख्य संरक्षक | श्री मांगीलाल गुर्जर (दुगार) मुख्य संरक्षक | श्री मनोहरलाल गुर्जर मुख्य संरक्षक

RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

सामाजिक, राजनैतिक समाचार, आध्यात्मिक ज्ञान, धर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य-कला एवं संस्कृति की अमृतमयी पत्रिका

वर्ष : 13 अंक: 6 जयपुर प्रकाशन तिथि: 5 अगस्त, 2025 मासिक

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यतीन्द्र कुमार वर्मा
सम्पादक- वीरगुर्जर, लोनी, मेरठ (उ.प्र.)
स्व. श्री रामगोपाल गार्ड
प्रदेशाध्यक्ष-राज.गुर्जर महा.,जयपुर

प्रकाशन / प्रधान संरक्षक :
कालूलाल गुर्जर
पूर्व मंत्री, सरकारी मुख्य सचेतक, राज.सरकार
•
प्रकाशक/सम्पादक :
मोहनलाल वर्मा- मो. 9782655549
•
प्रकाशन व्यवस्थापक :
सरदार सिंह चेची- मो. 9829063710
•
प्रबन्ध सम्पादक :
वी.बी. जैन- मो. 9261640571
•
सह-सम्पादक :
डॉ. दक्षा जोशी-अहमदाबाद (गुजरात)
भावना गुर्जर- मो. 8890499200
अमरसिंह कसाना- मो. 9460875478
छीतरलाल कसाना- मो. 9929560765
शैतान सिंह गुर्जर- मो. 9414315639
देवनारायण रग्गल- मो. 9414321012
•
विधि सलाहकार :
प्रहलाद सिंह अवाना- मो. 9414752520
हजारीलाल सराधना- मो. 9414752519
•
सीकर संवाददाता : भंवर सिंह धाभाई
समस्त पद अवैतनिक हैं।
•
सम्पादकीय कार्यालय: 3714, कालों का मौहल्ला, के.जी.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
E-mail:devchetnanews@gmail.com

देव चेतना मासिक पत्रिका सहयोग राशि

प्रधान संरक्षक 11,000/-
मुख्य संरक्षक 5,100/-
पंचवर्षीय - 1100/-

1 बैंक खाता : मोहनलाल वर्मा
SBI, जौहरी बाजार, जयपुर
A/c No. 61163439684
IFSC: SBIN0031029

2 Bank A/c : DEV CHETNA
THE RAJASTHAN URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.
A/c No. 96000409474
IFS Code : UTIB0SRUCB1

:: अनुक्रम ::

1. सम्पादकीय... अखंड भारत सांस्कृतिक राष्ट्र निर्माण	4
2. वैश्विक मानव समाज को एक मंच पर लाने की...	5-8
3. चित्तौड़ व प्रतापगढ़ कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण	9-10
4. मेवाड़ क्षेत्र में गुर्जर समाज की एकजुटता पर मंथन	11-12
5. बीएमएस के 70 वर्षों की उपलब्धियों का समारोह	13-14
6. श्रीमती मंजू अवाना, राजेन्द्र दौराता, मानसिंह धनोरिया एवं विजय सिंह डोई को श्रद्धांजलि व भावांजलि	15-17
7. इतिहासकार ईसमसिंह चौहान को भावभीनी शब्दांजलि	23-25
8. नागपहाड़ को अतिशय क्षेत्र के रूप में पहचान मिले	26-27
9. मेरी भावनाओं की यात्रा...	27-28
10. एक समर्पित बहु शैली चित्रकार: भैरूलाल स्वर्णकार	29-31
11. अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर गुर्जर लोक संस्कृति व इतिहास की पहुँच बनाने की कार्ययोजना	32-33
12. गुर्जर साहित्य पर शोध व पुर्नलेखन समय की आवश्यकता	34-35
13. जीवन को बहुत नजदीक से देखना भी एक कला	35-36

सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर शहर न्यायालय होगा।
पत्रिका में प्रकाशित पठनीय लेख/सामग्री के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
पत्रिका प्रकाशन का इस सम्बन्ध में कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

सम्पादकीय...

अखण्ड भारत सांस्कृतिक राष्ट्र निर्माण में गुर्जर लोक संस्कृति का योगदान

अखंड भारत सांस्कृतिक राष्ट्र निर्माण में गुर्जर लोक संस्कृति की भूमिका के इतिहास की खोज करनी है! तो-

गुर्जर मोहन लाल वर्मा

सभ्यता और संस्कृति के इतिहास लेखन की दृष्टि से शोध करें :-

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में द्वाराहाट नमक नगर में स्थित गुर्जर देव मंदिर के खण्डहर, कश्मीर के मार्तंड मंदिर के खण्डहर, मुल्तान के सूर्य मंदिर के खण्डहर मूक साक्षी हैं, चित्तौड़गढ़ जिले में मैनाल के खण्डहर, महरौली के खंडहर, दिल्ली में पुराने किले के खण्डहर, सवाई माधोपुर में खंडार और रणथम्भोर दुर्ग के खण्डहर, गुर्जर आदि तीर्थ नाग पहाड़ पुष्कर के खण्डहर, खजुराहो मंदिरों के खण्डहर, कोणार्क के सूर्य मंदिर के खण्डहर, समूचे मध्य एशिया ही नहीं संपूर्ण जम्मू द्वीप में ऐतिहासिक स्मारकों के भग्नावशेष प्रश्न करते प्रतीत होते हैं कि वो इस दशा को समय के थपेड़ों से प्राप्त होने हैं अथवा किन आततायियों ने उन्हें इस स्थिति में पहुँचाया है। उनकी मानसिकता और निर्माताओं का अदम्य साहस इस बात का साक्षी है कि आखिर क्यों आसुरी प्रवृत्ति और दैवीय प्रवृत्ति में एक लम्बे काल खण्ड तक अखण्ड भारत गुर्जर मातृभूमि में यह संघर्ष चला। गुर्जर बगड़ावत भारत वार्ता लोक वार्ता में समाहित ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रतीक सम्पूर्ण घटनाक्रम की इतिहास और विज्ञान की दृष्टि से व्याख्या करते हुए विद्यमान है।

(जन्मना जाति संबंध जिज्ञासा की दृष्टि से हमें अपना स्वयं का इतिहास खोजना होगा तभी हम जन्मना जाति समाज संगठन कार्य करने में सक्षम हो सकते हैं)

मनुष्य जिस परिवार और जाति में जन्म लेता है, उसका उत्थान ही उसका राष्ट्रीय धर्म और कर्तव्य है। मनुष्य के इस कर्तव्य कर्म का प्रारंभ उसके निज व्यक्तित्व संगठन और उत्थान के माध्यम से परिवार जाति समाज और राष्ट्र धर्म का उत्थान संभव है।

व्यक्ति का व्यक्तित्व संगठित नहीं है तो उस व्यक्ति के द्वारा जन्मना जाति समाज और राष्ट्र धर्म के प्रति कर्तव्य पालन संभव ही नहीं है। व्यक्ति जीवन और सभी सामाजिक संस्थाएं परस्पर पूरक है। अनुभव में आता है कि लोग समाज सुधार और संगठन की बातें करते हैं तब लगता है!

बातें हैं, बातों का क्या?

जाति समाज संगठन के प्रति- प्रतिबद्धता ही व्यक्ति और समाज के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है। जाति समाज के साथ पूर्ण एकात्मकता व्यक्ति जीवन के आदर्श और व्यवहार में एकरूपता के बिना नहीं आ सकती है। इस दृष्टि से जाति समाज संगठन कार्य में लगे सभी व्यक्ति ही उन्नत जाति स्वरूप धारण करते हैं।

जाति समाज उत्थान आदर्श के साथ व्यक्ति निष्ठा ही जाति और समाज की उन्नति की कसौटी है अन्यथा जिस प्रकार धर्म शास्त्रों का जो ज्ञान पुस्तकों में है। उसे पढ़ने वाले व्यक्तिके आचार व्यवहार में नहीं है, तो वह मात्र उसके लिए पुस्तक है।

ईश्वर- धर्म और जन्मना जाति शब्द तर्क का विषय नहीं है, अनुभव-श्रद्धा और विद्या है। शिक्षा और विज्ञान बाहर खोज करता है, ईश्वर-धर्म और जन्मना जाति व्यक्ति स्वयं अपने दृश्य जीवन्त शरीर के भीतर प्रयोग और अनुसंधान के पथ से चलकर ही विद्या को प्राप्त होता है।

जितना हम भारत के इतिहास में गोता लगाते हैं उतना ही हमें ज्ञात होता है कि सनातन धर्मी और सनातन धर्म क्या है? धर्म और आध्यात्म को लेकर मानव चरित्र और चेतना का कर्म-धर्म, युद्ध हमें यह सन्देश देता है कि देश-धर्म और संस्कृति के परिवेश के अनुरूप ही मानव चेतना और चरित्र गति प्राप्त करता है। वर्तमान में सनातन धर्म अपने ही अनुयायियों के द्वारा किस प्रकार से अपसंस्कृति में परिवर्तित होता जा रहा है। संस्कृति के इस क्षरण को रोकने का एकमात्र उपाय लोकसंस्कृति में ही हमें प्राप्त हो सकता है। गुर्जर लोक संस्कृति में सनातन धर्मी संस्कृति के उत्थान के बीज अर्न्तनिहित है।

गुर्जर लोक संस्कृति संवर्धन एवं इतिहास में मेवाड़ का योगदान विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी

वैश्विक मानव समाज को एक मंच पर लाने की आवश्यकता -गुर्जर

भीलवाड़ा। गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान जिला इकाई भीलवाड़ा के तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी पालना जी श्री देवनारायण मंदिर में उप

जिला प्रमुख भीलवाड़ा शंकर लाल गुर्जर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। संगोष्ठी का उद्घाटन राजस्थान के पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर द्वारा किया गया।

डॉ. अरुणा गुर्जर ने बगड़ावत शौर्य लोकगाथा पर प्रकाश डालते हुए भगवान देवनारायण के अवतार सम्बन्धी घटनाक्रम तथा बगड़ावत भारत लोकवार्ता के प्रसंगों का जिक्र करते हुए उनकी ऐतिहासिकता को प्रतिपादित किया। गुर्जर लोक संस्कृति संवर्धन एवं इतिहास में मेवाड़ के योगदान को रेखांकित करते हुए डॉ. अरुणा गुर्जर ने कहा भगवान श्री देवनारायण की फढ में संपूर्ण लोक संस्कृति समाहित है। फढ़ में चित्रित प्रतीकात्मक गाथा के संबंध में हमें शोध करके भगवान श्री देवनारायण के लोक कल्याणकारी संदेशों को विश्व में प्रसारित करने की आवश्यकता है।

गुर्जर समाज के वयोवृद्ध इतिहासकार शोध संस्थान के राष्ट्रीय महामंत्री शैतान सिंह गुर्जर ने इतिहास में जो विकृतियां जानबूझकर उत्पन्न की गई है, उनके संबंध में समाज के समक्ष तर्क और तथ्य पूर्ण इतिहास प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। शैतान सिंह गुर्जर ने बताया कि मेवाड़ के महाराणाओं के पूर्वज वल्लभी वंश के अंश रहे हैं।

शैतान सिंह गुर्जर सीकर ने कुषाण, हूण, सोलंकी, चौहान, गुर्जर प्रतिहार, तंवर, गुहिलोत, खटाना आदि गुर्जर राजवंशों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा- इन राज्यवंशों की उपलब्धियों पर शोध कार्य एवं तर्कपूर्ण गुर्जर इतिहास का पुनर्लेखन करना जरूरी है।

बप्पा रावल द्वारा स्थापित गुहिल राज्य वंश का वल्लभी वंश से निकास रहा है। बप्पा रावल गुर्जर प्रतिहार मीहिरभोज के सामंत रहे हैं। पन्नाधाय ने मेवाड़ राज्य वंश के उत्तराधिकारी उदय सिंह को बचाने के लिए अपने पुत्र का बलिदान देकर मेवाड़ राज्य वंश की रक्षा की एवं अपनी राष्ट्रभक्ति के चरित्र चरितार्थ किया। यदि उदय सिंह नहीं बचते तो महाराणा प्रताप का जन्म नहीं होता और दुनिया के इतिहास

में महाराणा प्रताप हिंदू धर्म एवं संस्कृति रक्षक ऐतिहासिक पुरुष के रूप में अपनी पहचान नहीं बना पाते।

प्रात: स्मरणीय पन्नाधाय के व्यक्तित्व और कृतित्व को

आज विश्व के नारी समाज के समक्ष रखने की आवश्यकता है। संस्थान गुर्जर राज्य वंशो के इतिहास में नारी शक्ति के योगदान को रेखांकित करने के लिए उस पर शोध कार्य कर रहा है।

संगोष्ठी में इतिहासकारों एवं साहित्यकारों ने अपने उद्‌बोधन में देश धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए मेवाड़ के योगदान को प्रतिपादित किया।

राष्ट्रीय गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. मोहनलाल वर्मा ने गुर्जर समाज के विभिन्न अनछुए पहलुओं पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। गुर्जर समाज के इतिहास एवं संस्कृति विषय पर गुर्जर समाज की युवा पीढ़ी से शोध कार्य करने का आग्रह किया। उन्होंने गुर्जर कुषाण सम्राट कनिष्क, गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिरभोज से लेकर वर्तमान स्थिति में गुर्जर समाज की दशा और दिशा के बारे में सभी को बिस्तृत जानकारी दी।

वर्मा ने गुर्जर लोक संस्कृति में प्रचलित लोकगीत, लोक नृत्य, सामाजिक सांस्कृतिक परंपरा, सामूहिक मेलों, धर्मिक महत्व की ऐतिहासिक स्मारकों एवं घटनाओं का जिक्र करते हुए प्रतिपादित किया कि वर्तमान समय में भारतवर्ष की 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात संपूर्ण विश्व एक परिवार है, भगवान श्री देवनारायण ने अपनी अवतार लीला के माध्यम से, प्रकृति संरक्षण, आयुर्वेद चिकित्सा, गोधन संवर्धन तथा मानव कल्याण के लिए सामाजिक समरसता का जो संदेश

दिया उसे आज संपूर्ण विश्व तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

इस सबको दृष्टिगत रखते हुए वर्ल्ड पार्लियामेंट कांस्टीट्यूशन के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय संस्कृति शोध आयोग के साथ सामूहिक रूप से कार्य करने के लिए संस्थान ने संरक्षक के रूप में जुड़ना स्वीकार किया है। संस्थान द्वारा गुर्जर इतिहास संस्कृति कला शोध से संबंधित एक वेबसाइट निर्मित की गई है। वेबसाइट को भीलवाड़ा में पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर ने लांच किया।

अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विश्व को मानव कल्याण के लिए एक मंच पर लाने की आवश्यकता है। इस दिशा में वर्ल्ड पार्लियामेंट कॉन्स्टिट्यूशन

को बढ़ावा देने की दृष्टि से डब्ल्यू सीपीए द्वारा भारत में महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहे हैं।

इसी श्रृंखला में शोध संस्थान द्वारा भावी पीढ़ी के

विद्यार्थियों के लिए गुर्जर लोक संस्कृति, कला, साहित्य भाषा एवं इतिहास की जानकारी देने हेतु शीघ्र ही सर्टिफिकेट कोर्स भी प्रारंभ किया जाना सुनिश्चित किया गया है।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें श्री नरसिम्हा मूर्ति (बेंगलुरु), डॉ. दक्षा जोशी (अहमदाबाद) तथा पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर (भीलवाड़ा) को संस्थान का संरक्षक मनोनीत करने हेतु सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया।

शोध संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष ईसम सिंह चौहान का 21 जून को महाप्रयाण होने के कारण उनके स्थान पर हरिश्चंद्र भाटी पूर्व मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार को संस्थान का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने का सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया।

शोध संस्थान की वेबसाइट लॉन्च

संस्थान करेगा गुर्जर लोक संस्कृति एवं इतिहास का पुर्नलेखन

राष्ट्रीय गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान की ओर से गुर्जर इतिहास पर संगोष्ठी भीलवाड़ा शहर के समीप पालनाजी देवनारायण मन्दिर प्रांगण पांसल में आयोजन किया गया। भगवान देवनारायण की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की गई।

राजस्थान गुर्जर महासभा भीलवाड़ा के जिलाध्यक्ष शंकरलाल गुर्जर द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेशाध्यक्ष कालूलाल गुर्जर पूर्व कैबिनेट मंत्री ने समाज को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में आगे आने का आह्वान किया।

राजस्थान गुर्जर महासभा के जिलाध्यक्ष शंकरलाल गुर्जर उप जिला प्रमुख ने आह्वान किया कि युवा पीढ़ी आर्थिक क्षेत्र में आगे आये और अपने उद्योग स्थापित कर इतिहास रचकर गुर्जर समाज को आर्थिक रूप से मजबूत बनाए।

सामाजिक चितंक महावीर प्रसाद गुर्जर ने कहा कि गुर्जर सम्राट कनिष्क, गुर्जर सम्राट मिहिरभोज का साम्राज्य गुर्जर इतिहास का स्वर्णिम काल रहा है अब गुर्जर समाज को कौम के महापुरुषों से प्रेरणा लेकर एक बार फिर से गुर्जर समाज को इतिहास रचना होगा साथ ही कहा कि गुर्जर सम्राट कनिष्क ने शक संवत् की शुरुआत की जिसे भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय संवत का दर्जा दिया गया है। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश मंत्री लक्ष्मण सिंह गुर्जर ने कहा कि गुर्जर इतिहास के बिना भारतीय इतिहास ही शून्य है, उन्होंने समाज के युवाओं को संगठित होकर आगे बढ़ने का आह्वान किया। सामाजिक कार्यकर्ता नन्दलाल गुर्जर ने बिजौलिया किसान आंदोलन के प्रणेता विजय सिंह पथिक की स्मृति में बिजौलिया में पैनोरमा बनाने की मांग की।

एडवोकेट नरेंद्र गुर्जर ने गुर्जर समाज के इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान में हर क्षेत्र में आगे आने का आह्वान करते हुए कहा कि समाज में राजनैतिक चेतना स्थापित की जाए एवं युवा शिक्षा को पहली प्राथमिकता देकर हर क्षेत्र में आगे आये और सभी से निवेदन किया कि गुर्जर समाज दूध

के व्यवसाय को डेयरी उद्योग की तर्ज पर करके समाज मे आर्थिक क्रांति लाए। राष्ट्रीय खिलाड़ी रीना गुर्जर ने कहा कि गुर्जर इतिहास से प्रेरणा लेकर समाज में व्याप्त कुरीतियों को खत्म किया जाए।

गुर्जर समाज से बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान देने का आह्वान किया। भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि राजस्थान सरकार गुर्जर इतिहास को पाठ्य पुस्तकों में शामिल करें एवं चित्तौड़गढ़ जिले के मण्डफिया में स्थित सांवलिया मन्दिर में गुर्जर समाज के इतिहास की अवहेलना की जा रही है इस ओर सभी का ध्यानाकर्षण किया और मांग की है। सांवलिया जी मन्दिर में उचित जगह पर लखमा गुर्जर का भव्य स्मारक, प्रतिमा स्थापित की जावे।

कार्यक्रम को प्रिंसिपल मानाराम गुर्जर, पूर्व सरपंच गोपाल गुर्जर, पालनाजी ट्रस्ट उपाध्यक्ष उदयलाल गुर्जर, राजूलाल गुर्जर, पंचायत समिति सदस्य गोपाल गुर्जर, सोहनलाल गुर्जर, रामस्वरूप गुर्जर, शांतिलाल गुर्जर, विष्णु प्रसाद सांगावत, राधेश्याम गुर्जर, भैरूलाल गुर्जर आदि ने विचार रखे। कार्यक्रम में जिलेभर से गुर्जर समाज के प्रबुद्ध जन एकत्रित हुए।

संगोष्ठी के अन्त में राष्ट्रीय गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष इसम सिंह चौहान के निधन पर गुर्जर समाज की ओर से दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धाजंलि अर्पित की गई। संस्थान द्वारा ईसम सिंह चौहान के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पुस्तक प्रकाशित करने का भी निर्णय लिया गया।

गुर्जर भवन पंचकूला में पारम्परिक उल्लास से सजा तीज महोत्सव

पंचकूला। गुर्जर समाज कल्याण परिषद् पंचकूला द्वारा तीज पर्व के उपलक्ष में सैक्टर 10 स्थित गुर्जर भवन में भव्य तीज उत्सव का आयोजन किया गया। पारम्परिक लोक संस्कृति से ओतप्रोत इस आयोजन में 250 से अधिक महिलाओं और

बच्चों ने भाग लेकर उत्सव को रंगीन और यादगार बना दिया। कार्यक्रम दोपहर 12 बजे से लेकर शाम 4 बजे तक चला। जिसमें महिलाओं और बच्चों ने रंगबिरंगे परिधानों में सजकर नृत्य, अन्ताक्षरी गीत संगीत और झूले का आनन्द उठाया। पूरे भवन को गुब्बारों और फूलों से भव्य रूप से सजाया गया था। जिससे उत्सव का वातावरण और भी जीवन्त हो उठा।

महिलाओं की भूमिका इस आयोजन को सफल बनाने में उल्लेखनीय रही। सन्तोष स्टेफी, किरण व अन्य प्रबुद्ध महिलाओं ने कार्यक्रम के सफल संचालन में सक्रिय भागीदारी निभाई। परिषद् ने उनके योगदान के लिए हृदय से आभार व्यक्त करते हुए प्रशंसा की।

सांस्कृतिक उल्लास और सामूहिक भोजन समारोह का समापन स्वादिष्ट भोजन के साथ हुआ जिसका सभी ने भरपूर आनन्द उठाया।

यह आयोजन न केवल पारम्परिक त्योहार की खुशबू से सराबोर रहा बल्कि समुदाय की एकजुटता और संस्कृति संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का भी जीवन्त उदाहरण बन गया।

समारोह में परिषद् के प्रमुख पदाधिकारी व गणमान्य विशेष रूप से उपस्थित रहे। प्रमुख रूप से एडवोकेट राजेन्द्र छोकर (प्रधान), इंजीनियर राजवीर सिंह राज महामंत्री, जगमाल सिंह सचिव, पूर्व प्रधान मामचन्द छोकर, उप प्रधान राजेन्द्र सिंह चौहान, रायसिंह प्यारेवाला, जाने माने मंच संचालक पूनिया जी, सत्यवीर सिंह (सोलन), हजारीलाल, अवशीष भाटी, महिपाल सिंह, आदेश कुमार, विपुल कुमार, गोपाल चन्द तथा भवन कार्यालय स्टाफ सहित कई सम्माननीय व्यक्ति शामिल हुए।

राजस्थान गुर्जर महासभा जिला चित्तौड़ एवं प्रतापगढ़ कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह

पारसोली चित्तौड़ श्री देवनारायण हठमाला मन्दिर गुर्जर समाज के ऐतिहासिक संगम का साक्षी बना

पारसोली। राजस्थान गुर्जर महासभा की नवीन जिला कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन रविवार को श्री देवनारायण परिसर हठमाला पारसोली में उत्साह और गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम दोपहर 1 बजे शुरू हुआ जो शाम 5 बजे तक चला। कार्यक्रम में चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, झुन्झुनूं, बूंदी, कोटा, झालावाड़, बारां, प्रतापगढ़, सीकर जिले से आये समाज बन्धुओं ने बड़ी संख्या में भाग लेकर गुर्जर समाज की एकता का परिचय दिया। दिनभर तेज बारिश के बावजूद आयोजन स्थान पर जनसैलाब उमड़ पड़ा। जिसमें यह आयोजन समाज की एकजुटता और समर्पण का प्रतीक बन गया।

इस अवसर पर चित्तौड़गढ़ जिला अध्यक्ष मांगीलाल गुर्जर (दुगार) एवं प्रतापगढ़ जिलाध्यक्ष मनोहर लाल गुर्जर सहित दो दर्जन से अधिक पदाधिकारियों ने शपथ ग्रहण की। समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा ने की। समारोह में प्रदेश पदाधिकारियों एवं जिला अध्यक्षों ने अपने उद्‌बोधन में समाज की एकजुटता साहित्य एवं इतिहास के प्रति जागृति, समाज में शिक्षा को बढ़ावा, महिला सशक्तिकरण और युवाओं को संगठित करने जैसे विषयों पर विचार प्रस्तुत किये।

गुर्जर लोक संस्कृति एवं इतिहास पर शोध कार्य को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया गया। मुख्य वक्ताओं में वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष मन्नालाल गुर्जर पूर्व प्रधान कोटा, छीतर लाल कषाना प्रदेश महामंत्री, श्योदान गुर्जर जिलाध्यक्ष बूंदी, डॉ. बी.एल. गोचर जिलाध्यक्ष कोटा, युधिष्ठिर खटाणा प्रदेश महामंत्री युवा प्रकोष्ठ, शिवकुमार भड़क महामंत्री कोटा, प्रदेश उपाध्यक्ष छगन सिंह गुर्जर, शैतान सिंह गुर्जर प्रदेश महामंत्री, हरिप्रकाश भड़ाना जिलाध्यक्ष बारां, देवकरण गुर्जर प्रदेश संगठन संयोजक, लक्ष्मण गुर्जर, कैलाश गुर्जर, मोदूलाल गुर्जर, रामचन्द्र गुर्जर, उप जिला प्रमुख राजस्थान गुर्जर महासभा भीलवाड़ा जिलाध्यक्ष शंकर लाल गुर्जर, मोहरीलाल, नेमीचन्द गुर्जर (सरपंच दुगार), रतन गुर्जर सरपंच प्रतिनिधि माधोपुरा, लादू गुर्जर जीएसएस अध्यक्ष, धर्मेन्द्र गुर्जर, नारायण गुर्जर, रतन खानपुरा प्रमुख रूप से शामिल रहे।

दूरदराज से आये महासभा के पदाधिकारियों में समाज में शिक्षा का अलख जगाने वाले, युवाओं को संगठित करने, सामाजिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने तथा राजस्थान गुर्जर महासभा के संगठन को जिला व तहसील स्तर पर विस्तार करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में कैलाश गुर्जर, शंकर लाल गुर्जर, रघुनाथ गुर्जर, भोजराज गुर्जर, गोपीलाल गुर्जर, उदयलाल गुर्जर, पप्पूराम गुर्जर, गोदूलाल गुर्जर, नन्दकिशोर गुर्जर, सुखदेव गुर्जर, हीरालाल गुर्जर, मांगीलाल गुर्जर, सत्यनारायण गुर्जर, गंगाराम गुर्जर, राजकुमार गुर्जर, उगमालाल गुर्जर, पप्पूलाल, मोहनलाल, दिनेश गुर्जर आदि गणमान्य समाज बन्धुओं ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति के साथ आयोजन की शोभा बने।

प्रदेशाध्यक्ष कालूलाल गुर्जर ने अपने उद्बोधन में समाज को संगठित करने एवं तहसील स्तर पर कार्ययोजना बनाकर समाज के लोगों की वैयक्तिक व सामूहिक समस्याओं के निदान के लिये सुव्यवस्थित कार्ययोजना बनाने का आह्वान किया। गुर्जर ने इस अवसर पर टोंक जिलाध्यक्ष पद पर पूर्व प्रधान उदयलाल गुर्जर को नियुक्त किया तथा उदयपुर संभाग के अध्यक्ष का दायित्व पूर्व सरपंच नाथूलाल गुर्जर को सौंपने का निर्णय लिया।

प्रदेश महामंत्री छीतरलाल कषाणा ने प्रदेश कार्यसमिति द्वारा पूर्व में निर्धारित सात सूत्रीय सामाजिक विकास के कार्यक्रमों को पूरे प्रदेश में लागू करने का आह्वान किया। अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मेवाड़ क्षेत्र में गुर्जर समाज की एकजुटता पर मंथन

चारभुजा। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा सहित प्रदेश पदाधिकारियों ने मेवाड़ क्षेत्र में गुर्जर समाज की एकजुटता पर समाज के गणमान्य

व्यक्तियों के साथ बैठकर विचार-विमर्श किया। बैठक में मेवाड़ क्षेत्र में गुर्जर समाज के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थानों को चिह्नित करने पर बल दिया।

बैठक में समाज को एकजुट रहने का आह्वान किया गया। कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने कहा- देश में जाति और संप्रदाय के नाम पर राजनीति हो रही है। इससे वैदिक और पौराणिक संस्कृति का विखंडन हो रहा है। ऐसे समय में सनातन धर्म को जाग्रत करने के लिए बीजारोपण जरूरी है। तभी देश, समाज और राष्ट्र को बचाया जा सकता है। वर्मा ने कहा कि भगवान देवनारायण एवं पन्नाधाय से बड़ा प्रेरणास्पद गुर्जर समाज के लिए ऐतिहासिक दृष्टि से वर्तमान में कोई नहीं हैं। दोनों राजस्थान के इतिहास में पूजनीय हैं। देवनारायण को नारायण ज्योति स्वरूप 11 कला अवतार स्वीकार किया गया है।

श्री देवनारायण का अवतार ब्रह्माण्ड रचना के प्रतीक की व्याख्या करता है। देवनारायण का अवतार मालासेरी डूंगरी में हुआ था। उनकी पूजा राजस्थान और मध्यप्रदेश के अतिरिक्त देश के विभिन्न भागों में होती है। पन्नाधाय एक देश-धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए बलिदान का प्रतीक है। उन्होंने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर मेवाड़ के राजकुमार उदयसिंह की जान बचाई थी। यह घटना चित्तौड़गढ़ के इतिहास में दर्ज है। पन्नाधाय अपने कर्तव्य और स्वामीभक्ति के लिए जानी जाती है। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र में पूजनीय हैं और समाज उन्हें सम्मान देता है।

दो दिन पहले चित्तौड़ में हुए गुर्जर महा सम्मेलन में

मेवाड़ क्षेत्र के लिए चारभुजा निवासी नाथूलाल गुर्जर को दायित्व देने पर चर्चा हुई। इस दौरान कार्यकारिणी के सदस्य चारभुजा पहुंचे। उन्होंने चारभुजा नाथ के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। इस दौरान महासभा के महामंत्री शैतान सिंह, सीकर सभा महामंत्री भंवर सिंह, अजमेर जिला उपाध्यक्ष लेखराज चेतन गुर्जर, इतिहास संस्कृति भाषा शोध के राष्ट्रीय सचिव राजेश सराधनाद, चारभुजा गुर्जर समाज के किशनलाल

कानाराम गुर्जर एवं राजस्थान गुर्जर महासभा के महामंत्री ऋषिकेश गुर्जर के साथ पदाधिकारियों की ब्यावर जिले में यथाशीघ्र राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेश पदाधिकारियों का अभ्यास वर्ग आयोजित करने पर चर्चा हुई। कानाराम गुर्जर ने बताया कि ब्यावर का गुर्जर समाज अभ्यास वर्ग की समस्त व्यवस्थाएँ करने के लिए तत्पर है। ब्यावर जिला महामंत्री ऋषिकेश गुर्जर ने आश्वस्त किया कि संगठन के सभी पदाधिकारियों से इस विषय पर चर्चा पश्चात् कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर ली जायेगी।

राजावत, रामलाल गुर्जर, हीरालाल गुर्जर, जगनेश्वर गुर्जर सहित समाज के लोग मौजूद थे।

मेवाड़ से लौटते समय ब्यावर जिले में समाज के जाने-पहचाने कार्यकर्ता पूर्व सरपंच

शिक्षाविद् धीरसिंह धाभाई को डॉक्टरेट की उपाधि

झुंझुनूं। निकटवर्ती गांव बीबासर निवासी शिक्षाविद धीरसिंह धाभाई को डॉक्टरेट की उपाधि दी गई है। राजकीय कन्या महाविद्यालय चूरू में इतिहास विषय के सहायक आचार्य पद पर कार्यरत डॉ. धीरसिंह धाभाई को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई है। डॉ. धाभाई ने जयपुर राज्य में शिक्षा का विकास एक ऐतिहासिक अध्ययन (1901-1950 ई.) विषय पर अपना शोधकार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया। यह शोध कार्य इतिहासकार डॉ. मनीष श्रीमाली के निर्देशन में संपन्न हुआ।

डॉ. धीरसिंह धाभाई ने अपनी साधना, संघर्ष और सतत प्रयास से न केवल अपनी अकादमिक पहचान बनाई, बल्कि अपने क्षेत्र का नाम भी शिक्षा जगत में गौरवान्वित किया है। इन्होंने जयपुर राज्य में शैक्षणिक संस्थाओं का क्रमिक विकास, उनमें व्यापारिक घरानों का योगदान, महिला शिक्षा तथा शेखावाटी की इसमें भूमिका पर अपना शोध कार्य किया।

उल्लेखनीय है कि धीर सिंह के इलेक्ट्रोनिक मीडिया पर 8 लाख 60 हजार फॉलोअर्स हैं। शिक्षा, मनोविज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने अपने स्वयं के अवनी पब्लिकेशन के माध्यम से बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं और उनका लेखन जारी है। राजस्थान प्रदेश के विद्यार्थी जगत में उनकी खासी पहचान है। राजस्थान गुर्जर महासभा सीकर संभाग महामंत्री भंवर सिंह धाभाई के सुपुत्र हैं। प्रदेशभर से शुभचिन्तकों द्वारा बधाई प्रेषित की गई है। जिनमें राजेन्द्र सिंह दांता, करण सिंह दांता, सुमेर सिंह कुमास, यशवर्धन सिंह शेखावत सामाजिक कार्यकर्ता, विद्या प्रकाश मूंड ग्रेनाइट व्यवसायी के नाम उल्लेखनीय है। विशेष रूप से राजस्थान गुर्जर महासभा के सभी जिलाध्यक्षों, प्रदेश पदाधिकारियों एवं प्रदेश अध्यक्ष कालूलाल गुर्जर, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा ने डॉ. धीर सिंह धाभाई को उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की है।

भारतीय मजदूर संघ ने मनाया 70 वर्षों की उपलब्धियों का भव्य समापन समारोह

नई दिल्ली। भारतीय मजदूर संघ (BMS) ने अपने 70 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में वर्षभर चले आयोजनों की श्रृंखला का भव्य समापन समारोह 23 जुलाई 2025 को नई दिल्ली के के.डी. जाधव कुश्ती हॉल, इंदिरा गांधी स्टेडियम में आयोजित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत, विशिष्ठ अतिथि के रूप में केंद्रीय मंत्री मनसुख मंडविया एवं अध्यक्षता बीएमएस अध्यक्ष हिरानमय पांडेय द्वारा की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत इन्दु जम्वाल, अध्यक्ष दिल्ली प्रांत, बीएमएस के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने सभी आगंतुकों एवम् आतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने कहा इसके पूर्व 1970 में दिल्ली में प्रथम अधिवेशन का आयोजन हुआ था और आज का BMS-70 कार्यक्रम आयोजित हो रहा है, यह सभी कार्यकर्ताओं के लिए गौरव का विषय है।

अखिल भारतीय महामंत्री श्री रविन्द्र हिम्मते ने मंच से वर्षभर चले विभिन्न आयोजनों की जानकारी साझा करते हुए बताया कि किस प्रकार भारतीय मजदूर संघ ने पिछले सात दशकों में श्रमिक हितों की रक्षा करते हुए संगठनात्मक विस्तार और वैचारिक स्पष्टता बनाए रखी है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि समापन कोई अंत नहीं, बल्कि एक नया पड़ाव है- संगठन की यात्रा निरंतर चलती रहेगी।

श्री हिम्मते ने उन महान विभूतियों और कार्यकर्ताओं को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने संगठन को इस ऊंचाई तक पहुंचाने में अपना जीवन समर्पित किया। उन्होंने कहा, 23 जुलाई 2024 को मजदूर संघ ने अपने 70वें वर्ष में पदार्पण किया था, जिसकी शुरुआत उस ऐतिहासिक स्थल भोपाल से हुई, जहां से बीएमएस के कार्य की शुरुआत हुई थी। श्री हिम्मते ने कहा भारतीय मजदूर संघ ने अपने राष्ट्रीय, औद्योगिक और श्रमिक हित- इस त्रिसूत्रीय सिद्धांत पर कार्य करते हुए अपने 70 वर्षों के कार्यकाल को सफलतापूर्वक निभाया है। संगठन ने अपने मूल्यों में पारदर्शिता, सामूहिक निर्णय प्रणाली, तथा दलगत राजनीति से पूर्णत: दूर रहने का जो संकल्प लिया, वही इसकी दीर्घकालीन सफलता का आधार बना।

बीएमएस के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिरणमय पांडेय ने कहा मजदूर संघ 1989 के पूर्व दूसरे स्थान पर था परन्तु उसके बाद से अब तक बीएमएस देश का शीर्ष मजदूर संगठन बना हुआ है। उन्होंने कहा हमारा संगठन युवा और महिलाओं का नेतृत्व ने केवल देश में बल्कि विदेशों में भी प्रदान कर रहा है। जी 20 के अन्तर्गत एल 20 में नेतृत्व मजदूर संघ ने किया और दुनिया को भारतीय श्रमिक विचार से अवगत कराया।उन्होंने कहा- आज बीएमएस देशभर में 28 प्रदेशों, 44 महासंघों, और 6630 संगठनों के माध्यम से सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। भारत तक ही सीमित नहीं, नेपाल में भी बीएमएस की उपस्थिति संगठन के अंतरराष्ट्रीय विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत है।

श्री पांडेय ने कहा, पांडेय अपने 70वें वर्ष को एक पड़ाव मानता है, न कि अंत। यह संगठन अपने 100वें वर्ष में प्रवेश कर वैश्विक मंच पर भी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराएगा, ऐसा विश्वास उसके कार्यकर्ताओं और नेतृत्व को है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री वीर भगाये जी ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा यह केवल कार्यक्रम नहीं बल्कि विचारधारा एवं आंदोलन है। यह कार्यक्रम की भव्यता बता रही हैं यह अब समाज का कार्यक्रम बन चुका है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि केंद्रीय मंत्री मनसुख मंडविया ने मजदूर संघ की कार्यशैली की प्रशंसा करते हुए कहा मजदूर संघ की कार्यशाली सिखाती और प्रेरणा देती है। केंद्रीय मंत्री ने कहा बीएमएस 70 साल की लंबी कार्य अवधि में देश का सबसे बड़ा और दुनिया का महत्वपूर्ण संगठन बन चुका है। दुनिया में बीएमएस को सम्मान दिया जा रहा है।

समारोह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा- यह केवल उत्सव का समय नहीं, बल्कि आत्म-अवलोकन का भी अवसर है। हमें यह चिंतन करना चाहिए कि हमने अब तक क्या किया है और आगे हमें किस दिशा में बढ़ना है।

दुनिया को एक नया श्रमिक मॉडल देने की आवश्यकता है, और यह दायित्व बीएमएस को निभाना चाहिए। आज संगठन की जो प्रतिष्ठा है, वह पहली पीढ़ी के समर्पण, दूसरी पीढ़ी के विस्तार, और अब तीसरी एवं चौथी पीढ़ी की चेतना पर निर्भर है। यह भाव आगे भी बना रहना चाहिए। उन्होंने कहा, हमारे लिए मजदूरों का दुख समाज का दुख है। कोई व्यक्ति बीएमएस के पास लाभार्थी बनकर आता है और ध्येयार्थी बनकर चलता है।

कार्यक्रम में तकनीकी सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ी पहल के रूप में भारतीय मजदूर संघ ने एक नवीन डिजिटल प्लेटफॉर्म 'ई-कार्यकर्ता' ऐप की भी शुरुआत की, जो संगठन के कार्यकर्ताओं, कार्यों और संवाद को तकनीकी रूप से एकीकृत करेगा। साथ ही, बीएमएस की 70 वर्ष की यात्रा पर आधारित एक शॉर्ट फिल्म प्रदर्शित की गई। इसी अवसर पर बीएमएस की यात्रा को वर्णित करती हुई ऑर्गनाइजर वीकली पत्रिका का विशेष संस्करण को भी विमोचित किया गया।

इस भव्य कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर के संघ पदाधिकारियों के साथ बीएमएस के विभिन्न प्रदेशों के अध्यक्ष, महामंत्री, फेडरेशन लीडर्स, कार्यकारिणी सदस्य, नेपाल से आए प्रतिनिधि, दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता अन्य मंत्रीगण तथा दिल्ली-एनसीआर से हजारों की संख्या में कर्मचारी उपस्थित रहे। पूरे कार्यक्रम में जोश, अनुशासन और संगठन के प्रति अटूट समर्पण की झलक साफ दिखाई दी। समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ, जिसमें उपस्थित हजारों कार्यकर्ताओं ने श्रमिक हित, सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए अपने संकल्प को दोहराया।

ऑस्ट्रेलियन राजस्थानी एसोसिएशन के चुनाव, वीरेंद्र बने अध्यक्ष

जोधपुर। कई देशों में प्रवासी राजस्थानी एकजुट होकर एसोसिएशन बना रहे हैं ताकि वहाँ हमारी संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर सकें। इसी कड़ी में मेलबर्न में ऑस्ट्रेलियन राजस्थानी एसोसिएशन की वार्षिक सामान्य बैठक में नई नेतृत्व टीम का चुनाव किया गया। इसमें वीरेंद्र खटाना को एसोसिएशन का अध्यक्ष, एरिक्स बिश्नोई को उपाध्यक्ष, संजय राजपुरोहित को सचिव, देवेंद्र सिंह खंगारोत को कोषाध्यक्ष और सनिक जैन को पीआरओ चुना गया।

बैठक में राजस्थानी कम्युनिटी के लोगों ने भाग लिया और संगठन के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण फैसले लिए। एसोसिएशन के नए अध्यक्ष वीरेंद्र खटाना ने कहा कि हमारा लक्ष्य सिर्फ संगठन का विस्तार करना नहीं है, बल्कि हम चाहते हैं कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर ऑस्ट्रेलिया के हर हिस्से में पहुंचे। हम राजस्थानी संस्कृति के महत्व को समझते हैं और इसे भविष्य की पीढ़ी तक पहुंचाना हमारा प्राथमिक उद्देश्य होगा। पीआरओ सनिक जैन ने बताया कि नए नेतृत्व का मुख्य उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया में बसे राजस्थानी समुदाय के बीच एकता और सहयोग को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि हमारा मानना है कि राजस्थानी संस्कृति, परंपराएं और कला को ऑस्ट्रेलिया के अन्य समुदायों तक पहुंचाना बेहद जरूरी है, विशेषकर उन बच्चों के लिए जो राजस्थान से दूर रहकर बड़े हो रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि वीरेन्द्र खटाना गुर्जर समाज की खारीया मीठापुर निवासी मंगलाराम खटाना के पुत्र हैं। मंगलाराम खटाना राजस्थान मिनरल्स एण्ड डवलपमेंट विभाग से सेवानिवृत्त हैं। सदैव समाज सेवा कार्यों में अग्रणी रहे हैं। राजेश पायलट भवन एवं गुर्जर छात्रावास मोतीडूंगरी के निर्माण एवं संचालन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनका परिवार मारवाड़ क्षेत्र में प्रतिष्ठित परिवार है।

राजस्थान गुर्जर महासभा एवं देव चेतना पत्रिका परिवार की ओर से वीरेन्द्र खटाना के उज्ज्वल भविष्य के प्रति हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

जहाँ पहुँचना चाहते हो, पहले उसकी तैयारी करो।
जो भी काम करो पूरी मेहनत, लगन,
ईमानदारी के साथ खुश होकर करो।

स्व. श्रीमती मंजू अवाना को भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं भावांजलि

जयपुर। देव चेतना मासिक पत्रिका के प्रकाशक, सम्पादक मोहन लाल वर्मा की पुत्री श्रीमती मंजू अवाना का कैंसर रोग के चलते 19 जून, 2025 को निधन हो गया। दाह संस्कार के पश्चात् 21 जून को शोक सभा में समाज के गणमान्य व्यक्तियों, परिवारजनों तथा राजस्थान राज्य विद्युत कर्मचारी संघ, भारतीय मजदूर संघ, वरिष्ठ नागरिक परिसंघ एवं राजस्थान गुर्जर महासभा सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने शोक व्यक्त करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्य रूप से गृहराज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम, प्रहलाद सिंह अवाना, हजारी लाल गुर्जर, अशोक गार्ड, चन्द्रशेखर बसवा, कैलाश बड़ाया, विद्याधर शर्मा, मुरारी लाल शर्मा सहित सैंकड़ों सामाजिकों द्वारा शोक व्यक्त किया गया।

स्व.श्रीमती मंजू अवाना
स्वर्गवास दिनांक 19.06.2025

राजस्थान गुर्जर महासभा के अजमेर जिलाध्यक्ष भंवर लाल चौहान, प्रदेश मंत्री लक्ष्मण सिंह मुण्डन, महामंत्री शैतान सिंह गुर्जर, गुर्जर छात्रावास सीकर के पूर्व अध्यक्ष अर्जुन लाल गुर्जर, राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेशाध्यक्ष कालूलाल गुर्जर, प्रदेश महामंत्री छीतर लाल कषाणा, झालावाड़ जिलाध्यक्ष सूरतराम गुर्जर, राजस्थान गुर्जर महासभा युवा प्रकोष्ठ महामंत्री युधिष्ठिर खटाणा, प्रदेश अध्यक्ष गौरव चपराना, गुर्जर दर्शन के सम्पादक सरदार सिंह गुर्जर सहित देशभर से सैंकड़ों लोगों ने सोशल मीडिया द्वारा शोक संवेदना व्यक्त करते हुए अपनी श्रद्धांजलि तथा शोक संतप्त परिवार को इस दु:खद घड़ी को सहन करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को परम शांति प्रदान करते हुए अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

उल्लेखनीय है कि मोहन लाल वर्मा की पुत्री मंजू का जन्म 24 अक्टूबर, 1979 को हुआ। शिक्षा पश्चात् विवाह 22 गोदाम जयपुर निवासी रघुवीर सिंह अवाना के पुत्र श्री धीरेन्द्र सिंह अवाना के साथ दि. 26 नवम्बर, 2001 को जयपुर में सम्पन्न हुआ था।

श्रीमती मंजू अवाना अपने पीछे एक पुत्र भानु प्रताप सिंह अवाना एवं एक पुत्री माधवी अवाना को छोड़ गई है।

स्व. राजेन्द्र गुर्जर (दौराता) को भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं भावांजलि

जयपुर। जयपुर पोलोविक्ट्री के मूल निवासी श्री राजेन्द्र कुमार गुर्जर (दौराता) सेवानिवृत्त आर.टी.ओ. ऑफिस जयपुर का हृदयाघात से सोमवार, दि. 7 जुलाई, 2025 को निधन हो गया। वर्तमान में राजेन्द्र कुमार दौराता प्रताप नगर जयपुर में रह रहे थे। राजस्थान परिवहन कर्मचारी चालक संघ के लम्बे समय तक अध्यक्ष रहते हुए कर्मचारियों के हितों के लिए सदैव संघर्षशील रहे।

मिलनसार एवं समाजसेवी व्यक्तित्व के धनी राजेन्द्र दौराता के निधन का समाचार सुनकर जयपुर के गुर्जर समाज में शोक की लहर व्याप्त हो गई। परिवारजनों द्वारा आयोजित शोक सभा में गुर्जर समाज जयपुर के गणमान्य व्यक्तियों सहित राजनैतिक क्षेत्र के विभिन्न नेताओं तथा सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए शोक व्यक्त किया। राजेन्द्र दौराता के पुत्र अनिल गुर्जर, गुर्जर समाज के संगठनों एवं भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा में सक्रिय हैं।

भारतीय जनता पार्टी जयपुर शहर के मंत्री सुरेश गुर्जर, नीतू गुर्जर मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष चन्द्रशेखर बसवा,

राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, सामूहिक विवाह आयोजन समिति के अध्यक्ष गोविन्द पोसवाल, कन्हैयालाल छावड़ी, नवरतन बारवाल, जीवन राम मावरी सहित विभिन्न पदाधिकारियों एवं सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं ने अपनी भावांजलि अर्पित की। राजेन्द्र दौराता अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

गणमान्य व्यक्तियों ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए अपनी श्रद्धांजलि तथा शोक संतप्त परिवार को इस दु:खद घड़ी को सहन करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को परम शांति प्रदान करते हुए अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें।

मानसिंह धनोरिया का हृदयाघात से निधन

बारां जिले के छबड़ा क्षेत्र से गुर्जर समाज के जाने-माने समाजसेवी नेता तीन बार प्रधान सहित विभिन्न पदों पर रहे मानसिंह धनोरिया का धार्मिक यात्रा के दौरान हृदयाघात से निधन हो गया। उनके निधन का समाचार सुनकर सम्पूर्ण हाड़ौती एवं राजस्थान के गुर्जर समाज में शोक की लहर व्याप्त हो गई। उसी दिन शाम को उनका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। अन्तिम यात्रा में बड़ी संख्या में सामाजिक, राजनैतिक, नेता, व्यापारी एवं समाज के विभिन्न संगठनों के लोग सम्मिलित हुए। छबड़ा पंचायत समिति के तीन बार प्रधान रहे मानसिंह धनोरिया गुर्जर समाज के उत्थान के लिए हमेशा सक्रिय रहे हैं। बारां एवं हाड़ौती क्षेत्र में राजस्थान गुर्जर महासभा के कार्य विस्तार में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है।

धनोरिया ने वर्ष 2003 एवं 2013 में विधानसभा चुनाव भी लड़ा लेकिन एक बार मात्र 2000 वोटों से और दूसरी बार राजपा से लड़कर कांग्रेस से अधिक वोट लेकर वे दूसरे नम्बर पर रहे। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष कालूलाल गुर्जर एवं कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा ने उनके निधन को गुर्जर समाज की अपूरणीय क्षति बताते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये।

राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेश कार्यालय मंत्री
विजय सिंह डोई का महाप्रयाण

जयपुर। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यालय मंत्री विजय सिंह डोई का 28 जुलाई को निधन हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे, अस्वस्थता के दौरान ही चिकित्सा के चलते हुए उनका निधन हुआ। डोई का अंतिम संस्कार दौसा जिले में पैतृक गांव ईटंका में 29 जुलाई को हुआ।

31 जुलाई को उनके पैतृक निवास पर आयोजित शोक सभा में समाज के गणमान्य लोगों ने पहुंचकर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेशाध्यक्ष कालूलाल गुर्जर ने उनके निधन को समाज की अपूरणीय क्षति बताया।

सिंचाई विभाग से सेवानिवृत्त विजय सिंह डोई में प्रारंभ से ही समाज के प्रति समर्पित भाव से सेवा की प्रवृत्ति रही है। सिंचाई विभाग

के कर्मचारी संघ में भी वे लंबे समय तक विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते रहे हैं।

मंदिर श्री देवनारायण धर्मार्थ जनकल्याण ट्रस्ट, दूदू के भी वे ट्रस्टी रहे हैं। सामूहिक विवाह आयोजन समिति गुर्जर समाज जयपुर में भी उन्होंने कोषाध्यक्ष पद का दायित्व भली प्रकार निर्वाह किया है। राजस्थान गुर्जर महासभा की संगठनात्मक गतिविधियों में भाग लेते हुए लंबे समय से वे प्रदेश कार्यालय मंत्री का दायित्व निर्वाह करते रहे हैं।

देव चेतना मासिक पत्रिका के प्रधान संरक्षक श्री विजय सिंह डोई के पैतृक गांव पहुंचकर राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, प्रदेश महामंत्री शैतान सिंह गुर्जर, सीकर संभाग महामंत्री भंवर सिंह धाभाई एवं गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के मंत्री राजेंद्र सराधना ने उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करते हुए शोक संतप्त परिवारजनों को इस दुखद घड़ी को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करने हेतु प्रार्थना की।

अनकही अनुभूति : पाँचली से नमो भारत तक

अमर शहीद कोतवाल धन सिंह जी की स्मृति में अशोक चौधरी का भावपूर्ण स्मरण

✍ प्रस्तुति : राजीव वर्मा

नमो भारत ट्रेन में यात्रा करते हुए जब मेरी नजर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (NCRTC) द्वारा लगाए गए उस पोस्टर पर पड़ी, जिसमें अमर शहीद कोतवाल धन सिंह जी को सम्मानपूर्वक स्मरण किया गया था, तो मन गर्व और भावुकता से भर उठा।

ट्रेन की तेज रफ्तार के बीच मैं लोगों के चेहरों पर देख रहा था- यात्रा का आनंद, और अपने पूर्वजों के शौर्यपूर्ण कार्यों का गर्व। यह ऐसा अनुभव है जिसे शब्दों में बाँधना मुश्किल है- यह आत्मा की गहराई तक उतरकर जीवन को अर्थ देता है।

स्मृतियों का कारवां - पाँचली 1998

बरबस ही मन 10 मई, 1998 की उस सुबह में पहुँच गया, जब पाँचली की पावन धरती पर हमने पहली बार कोतवाल धन सिंह जी की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित किया था। उसी दिन वहाँ शहीद स्मारक की नींव रखी गई थी और पहली बार उनके चित्र का सार्वजनिक रूप से अनावरण हुआ था।

वह क्षण केवल एक कार्यक्रम नहीं था- वह स्वतंत्रता संग्राम के अमर गाथा को फिर से जीवंत करने का अवसर था। उस समय हमने जो दीप जलाया था, आज वह और अधिक उजाला फैलाते हुए आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा दे रहा है।

अनमोल साथी, अमर यादें

आज इस पोस्टर को देखकर मेरे मन में उन तीन साथियों की यादें उमड़ आईं- श्री रमेश चंद्र नागर, नेहरू नगर मेरठ, श्री ऊधम सिंह भड़ाना, काजीपुर मेरठ, श्री धर्मवीर सिंह पोसवाल, मीनाक्षीपुरम मेरठ।

जो उस प्रथम कार्यक्रम में हमारे साथ खड़े थे। समय के साथ वे हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन आज उनकी आत्माएँ निश्चित ही इस सम्मान को देखकर प्रसन्न होंगी। यह उनकी तपस्या और प्रतिबद्धता का ही परिणाम है कि आज कोतवाल धन सिंह जी का नाम नई पीढ़ी तक पहुँच रहा है।

पाँचली से नमो भारत तक - एक यात्रा

1998 में पाँचली से जो यात्रा शुरू हुई थी, आज वह नई ऊँचाइयों तक पहुँच चुकी है। नमो भारत ट्रेन में लगा यह पोस्टर केवल एक शहीद का स्मरण नहीं है, बल्कि उस संघर्ष, त्याग और सम्मान की यात्रा का प्रतीक है जिसे हमने मिलकर शुरू किया था।

आज जब लोग इस पोस्टर को देखते हैं, तो वे सिर्फ इतिहास नहीं पढ़ते- वे अपने पूर्वजों की आत्मा से जुड़ते हैं। और यही जुड़ाव हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

पदयात्रा

पदयात्रा ध्वज

पधारिये

श्री देवनारायणम नम:

पधारिये

पदयात्रा

स्व. श्री रामगोपाल गाडे

विशाल देवधाम जोधपुरिया पदयात्रा

25 अगस्त, 2025 को जयपुर से प्रारम्भ

श्री देवनारायण जन-कल्याण संस्थान राजस्थान प्रदेश द्वारा आयोजित

भगवान श्रीदेवनारायण की 39 वीं ध्वज-पदयात्रा

सम्मानीय बन्धुओं राम राम ! हमारे आराध्य देव भगवान श्रीदेवनारायण जी की उनतालीसवीं ध्वज-पदयात्रा 25 अगस्त, 2025 को प्रात:11.15 बजे मन्दिर श्री देवनारायण जी पुरानी बस्ती जयपुर से श्री श्री 1008 सन्त शिरोमणी राम सेवक दास जी द्वारा आरती कर प्रारम्भ करेंगे, जो 28 अगस्त, 2025 को देवधाम जोधपुरिया पहुँचेगी। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पदयात्रा में भाग लेकर धर्म सत्संग का लाभ प्राप्त करें।

15 अगस्त, 2025- दिल्ली, 15 अगस्त -कोसी जमुना (यू.पी),16 अगस्त -गोवर्धनजी (यू.पी),19 अगस्त -नौगांवा रामगढ, 19 अगस्त -विमलेश्वरकुण्ड कांमा (भरतपुर), 19 अगस्त -हिसार, 20 अगस्त -रेवाडी-नारनोल, 20 अगस्त-खेतडी(झून्झूनू), 21 अगस्त -नाँगल चौधरी, 21 अगस्त-नीमकाथाना, 21 अगस्त-बेहरोड, 21 अगस्त-बानसूर, 22 अगस्त-कोटपुतली, 22 अगस्त-रेणी,23 अगस्त-पाटोली(करौली), 24 अगस्त-निम्बी (जमवारामगढ़), 24 अगस्त-डिगारिया टप्पा बांदीकुई (दौसा), 27 अगस्त-मालपुरा दरवाजा टोंक, 25 अगस्त, 2025 प्रात: 6.00 बजे चौमोरिया मन्दिर आमेर रोड जयपुर से प्रारम्भ होगी।

कार्यक्रम

सोमवार, 25 अगस्त, 2025-जयपुर से गोनेर - मंगलवार, 26 अगस्त, 2025-गोनेर से चाकसू
बुधवार, 27 अगस्त, 2025-चाकसू से निवाई - गुरूवार, 28 अगस्त, 2025-निवाई से देवधाम जोधपुरिया

गुर्जर समाज से सहयोग की अपील

राजस्थान के गुर्जर समाज द्वारा वर्ष 1987 से श्रीदेवनारायण ध्वज - पदयात्रा के भली प्रकार संचालन में समाज ने अपार प्रेम व्यक्त करते हुये जो सहयोग किया है वह सराहनीय है। सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं को जिन्होने गत पदयात्रा में तन-मन-धन से सहयोग दिया उसके लिये संस्थान आपका आभार व्यक्त करता है।

शंकर लाल कसाणा	हरि नारायण मणकस	सुरेश चाड	मोहन लाल बागड़ी
प्रदेश अध्यक्ष	प्रदेश महामंत्री	कोषाध्यक्ष	संरक्षक
मो. : 98291 12101	मो. : 99296 90880	मो. : 91164 45839	मो. : 94140 40946

प्रदेश कार्यकारणी सदस्य :- उपाध्यक्ष : राम सिंह कसाणा, नाथू लाल तँवर, रतनलाल कसाणा, प्रभुदयाल सराधना, जयसिंह चन्देला, (हरियाणा), गोविन्द नारायण हॉकला, बजरंग लाल भडाणा, लीलाराम चेलरवाल, संयुक्त मंत्री-रामजीलाल घाँघल, महावीर कसाणा, रामधन चेची, जीवणराम मावरी, रामेश्वर दयाल मणकस, ओमप्रकाश जांगल, प्रकश चन्द्र रावत (पी.सी.) रामावतार बड़िया संगठन मंत्री : कुँज बिहारी मावरी, राम करण सराधना, विनोद उमरवाल, अनिल दोराता, दीपक भूमला, हीरालाल, शीशराम रावत, हैमराज भाटी प्रचार मंत्री : बहादुर चाड, बिरदी चन्द गिरार्टी, लालचन्द पोसवाल, मनोज कुमार सूद, महिला प्रदेश अध्यक्ष : श्रीमाती उषा पोसवाल, रामजी लाल भडाणा जयपुर उत्तर : बाबू लाल सिन्धु, जयपुर दक्षिण : जयनारायण अमावता, कोटपूतली : दयाराम कसाणा दौसा : रतनलाल कसाणा, अलवर उत्तर : सोहन लाल देवतवाल, अलवर पुर्व : रतिराम मावई, भरतपुर : विक्रम रजाणों (आर सी) एम. पी.-देवी शंकर (श्योपुर) देवधाम ध्वज स्वागतकर्त्ता : फूलचन्द लांगडी, एड. शैलेन्द्र धाभाई, सुरज्ञान सिंह हरसाणा, श्रवण भोपा।

समस्त सदस्य, जिला कार्यकारणी ध्वज धारक तथा समस्त गुर्जर समाज

कार्यालय : मन्दिर श्री देवनारायण जी 2713, बगरु वालों का रास्ता, पुरानी बस्ती, जयपुर।

सौजन्य से : रुपनारायण गुर्जर के लिये आर. एन. प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 20-डी, रीको इण्डिस्टीयल एरिया, कूकस द्वारा मुद्रित मोबाइल : 9351420658

RNI No. RAJHIN/2011/41434

देव चेतना

प्रादेशिक राष्ट्रीय राजनैतिक समाचार एवं विश्लेषणात्मक लेख, जातीय सामाजिक समाचार एवं वरिष्ठ नागरिकों से सम्बन्धित कल्याणकारी योजनाओं एवं संगठनात्मक गतिविधियों से सम्बन्धित समाचारों के लिए देव चेतना पाक्षिक समाचार पत्र की सदस्यता ग्रहण करें।

पाक्षिक समाचार पत्र विगत वर्ष 2011 से नियमित प्रकाशित हो रहा है।

सहयोगी सदस्य के रूप में सदस्यता लेकर एवं अपने प्रतिष्ठान/कार्यालय का विज्ञापन प्रकाशित करवाकर आर्थिक सहयोग करें।

देव चेतना पाक्षिक समाचार पत्र सहयोग राशि

एक वर्षीय : 300/-	दो वर्षीय : 550/-
पंचवर्षीय : 1100/-	आजीवन : 5100/-

समाचार पत्र प्रत्येक माह की 5 व 20 तारीख को प्रकाशित किया जाता है।

Bank A/c Name : DEV CHETNA
THE RAJASTHAN URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.
A/c No. 96000409474
IFS Code : UTIB0SRUCB1

सम्पादकीय कार्यालय :
3714, कालों का मौहल्ला, के.जी.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
मो. 9782655549 E-mail:devchetnanews@gmail.com

राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष
मोहन लाल वर्मा की सुपुत्री

श्रीमती मंजू गुर्जर

(धर्मपत्नी श्री धीरेन्द्र सिंह अवाना)

का 19 जून, 2025 को असामयिक निधन हो जाने पर

राजस्थान गुर्जर महासभा

गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान

प्रदेश वरिष्ठ नागरिक समिति (बीएमएस)

मैटल्स एण्ड इलेक्ट्रीकल्स मजदूर संघ (बीएमएस)

के पदाधिकारियों एवं जिला पदाधिकारियों द्वारा

भावविह्वल श्रद्धांजलि

कालूलाल गुर्जर
प्रदेश अध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

सरदार सिंह चेची
जयपुर शहर जिलाध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

शैतान सिंह गुर्जर
महासचिव
गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान

विद्याधर शर्मा
प्रदेश अध्यक्ष
प्रदेश वरिष्ठ नागरिक समिति राज. (BMS)

गोविन्द सहाय पारीक
अध्यक्ष
मैटल्स एण्ड इलेक्ट्रीकल्स मजदूर संघ (BMS)

ललित दुबे
महामंत्री
मैटल्स एण्ड इलेक्ट्रीकल्स मजदूर संघ (BMS)

राजस्थान गुर्जर महासभा की ओर से

रक्षा बन्धन, स्वतन्त्रता दिवस, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिरभोज जयन्ती एवं श्री गणेश चतुर्थी व श्री देवनारायण भादवीं छठ के पावन पर्व पर समस्त देशवासियों एवं गुर्जर समाज को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

कालूलाल गुर्जर
प्रदेश अध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

मोहन लाल वर्मा
प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

प्रहलाद सिंह अवाना
प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

सरदार सिंह चेची
जयपुर शहर जिलाध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

मन्नालाल प्रधान (कोटा)
प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

शैतान सिंह गुर्जर
प्रदेश महामंत्री
राजस्थान गुर्जर महासभा

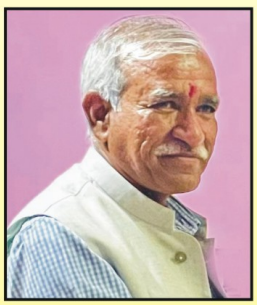

छीतर लाल कषाणा
प्रदेश महामंत्री
राजस्थान गुर्जर महासभा

रोहित सिंह चेची
प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा
युवा प्रकोष्ठ

दशम् पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजली

स्व. श्रीमती चाँददेवी

(धर्मपत्नी श्री जगजीत सिंह सराधना)

आपका कर्मठ गरिमामय व्यक्तित्व सदैव हमको
प्रगति के पथ पर मार्गदर्शित करता रहेगा।
हम सभी परिवारजन आपको
भावविह्वल श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

जन्मतिथि- 5 जुलाई, 1951
पुण्यतिथि- 26 जुलाई, 2015

श्रद्धावनत :

जगजीत सिंह सराधना (पति)

नीरजपाल सिंह-विभा, गौरवपाल-मीनाक्षी (पुत्र-पुत्रवधू), केशव, कुश, कनिष्क (पौत्र)

प्लाट नं. 100, पथिक नगर, कालवाड़ रोड, जयपुर (राज.) मो. 6378443025

आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष नानजी भाई गुर्जर परिवार की ओर से
रक्षा बन्धन, स्वतन्त्रता दिवस, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, गुर्जर प्रतिहार सम्राट
मिहिरभोज जयन्ती एवं श्री गणेश चतुर्थी व श्री देवनारायण भादवीं छठ के
पावन पर्व पर समस्त देशवासियों एवं गुर्जर समाज को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

ISO 9001:2015 CERTIFIED

JAI ASHAPURA HYDRAULICS

Manufacturer of All Type of Hydraulic Lift...

NANJIBHAI GURJAR
MANAGING DIRECTOR

SINCE:2003

INDIA'S LARGEST INDIGENOUS MANUFACTURE OF HYDRAULIC LIFT

HYDRAULIC CYLINDERS

POWER PACK

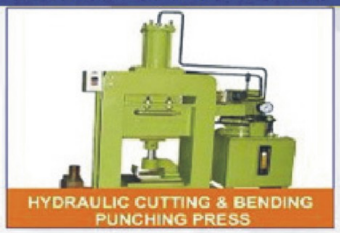
HYDRAULIC CUTTING & BENDING PUNCHING PRESS

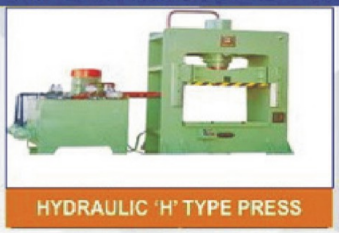
HYDRAULIC 'H' TYPE PRESS

sales@jahlifts.com
www.jahlifts.com

FACTORY
Ground Floor, Industrial Gala No.A-05 06
S.No: 26/02,Global Industrial Park
Valwada,Vapi
Dist: Valsad,Gujarat-396105,

Office No.4, Triveni Apartment,
Near Ashirwad Hospital,
Behind Dr.Parikh Nursing Home,
Chala-Vapi, Gujarat, 396191.

982 418 6890 / 982 473 6730

गुर्जर इतिहास, साहित्य एवं समाज सुधार के पुरोधा ईसम सिंह चौहान को भावभीनी श्रद्धांजलि एवं शब्दांजलि

हाल ही में 21 जून, 2025 को गुर्जर समाज की महान विभूति ईसम सिंह चौहान का निधन हो गया। उनके निधन का समाचार सुनकर गुर्जर समाज के लोग स्तब्ध रह गये। वहीं साहित्य एवं इतिहास जगत में शोक की लहर व्याप्त हो गई। उनको देशभर से श्रद्धांजलि देने के समाचार सोशल मीडिया पर आना शुरू हो गये। इतिहासकार, साहित्य, भाषा एवं सामाजिक संगठनों के मार्गदर्शक पूर्व आबकारी कमिश्नर श्री ईसम सिंह चौहान के देहांत की खबर सुनकर देशभर के गुर्जर समाज एवं साहित्य जगत में शोक की लहर छाई। अनेकों पुस्तकों के लेखक साहित्यकार एवं इतिहासकार का निधन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। आपका सामाजिक चिंतन, आपका सानिध्य निश्चित रूप से दिशा देने वाला रहा है। समाज को आपकी कमी हमेशा खलती रहेगी। राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष कालूलाल गुर्जर, कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, अखण्ड भारत गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवनारायण गुर्जर ने शोक व्यक्त करते हुए परमात्मा से दिवंगत आत्मा को परम शांति प्रदान करते हुए अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने हेतु प्रार्थना की।

साहित्यकार मुकट मणिराज ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया- इस दुख भरी सूचना से भारी कष्ट हुआ है, वे बहुत बड़े साहित्यकार एवं समाज के जागरूक उपदेष्टा थे। बहुत स्थानों पर गुर्जर हिस्ट्री सेमिनार के अवसर पर उनसे भेंट होती रही थी। गुर्जर इतिहास के विषय में उन्हें भारी जानकारी थी वह मुजफ्फरनगर जनपद के रहने वाले थे लेकिन बाद में सहारनपुर में अपना मकान बनाकर रहने लगे थे। उनकी कर्मभूमि अलवर थी और वहीं पर सेवानिवृत्ति के बाद वकालत का बहुत सुंदर कार्य उन्होंने किया है। उन्होंने जिला आबकारी अधिकारी रहते हुए कई जगह राजस्थान में कुएं भी बनवाए। शारीरिक रुप से बेहद स्वस्थ और सुंदर व्यक्ति थे। वे भारतीय गुर्जर परिषद के आजीवन सदस्य रहे। उनका व्यवहार बहुत ही मृदुल और मिलनसारिता पूर्ण रहा। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को चिर शांति दें एवं शोकाकुल परिवार व मित्रगणों को इस असीम दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। परमात्मा की व्यवस्था में रहना मनुष्य की विवशता है। उनका जाना समाज की भारी हानि है। वे चलते-फिरते समाज के साहित्य की लाइब्रेरी थे।

इतिहासकार ईसम सिंह चौहान का निधन समाज के लिये अपूरणीय क्षति। बड़े हौंसले व जीवट के धनी थे ईसम सिंह जी। उन्होंने समाज को बहुत कुछ दिया। हमेशा समाजसेवा के उपक्रमों से जुड़े रहे। गुर्जर इतिहास के नवलेखन में आपका बड़ा योगदान रहा है। उनकी कमी सदैव खलती रहेगी।

शोक व्यक्त करने एवं परिवारजनों को सांत्वना देने के लिए न केवल अलवर बल्कि पूरे राजस्थान और देशभर से लोग उनके निवास स्थान पर अलवर पहुँचने लगे। गुर्जर इतिहास, साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, महामंत्री शैतान सिंह गुर्जर, राष्ट्रीय मंत्री राजेन्द्र सराधना एवं श्रीमती सुनीता सराधना ने भी उनके निवास पर पहुँचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। उनकी तेरहवीं तक श्रद्धांजलि देने वालों का तांता लगा रहा।

स्व. ईसम सिंह चौहान पश्चिमी उत्तरप्रदेश के कलस्याण चौहान कुटुम्ब के सदस्य थे। जो वर्तमान में कैराना क्षेत्र में सैंकड़ो गांवों में फैले हुए हैं। उनका मूल गांव बीनड़ा था। पश्चिमी उत्तरप्रदेश के शामली मुजफ्फरनगर क्षेत्र में बसे गुर्जर चौहान मूलरूप से 12वीं सदी में सम्राट पृथ्वीराज चौहान के

साम्राज्य सांभर, अजमेर और दिल्ली में मोहम्मद गौरी से पराजित होने के पश्चात् पृथ्वीराज चौहान के भाई हर्रोराज के बेटों ने राजस्थान से चलकर पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जाकर अपना डेरा डाला और वे वहीं बस गये। हर्रोराज के तीन पुत्र कलसोराव, देवराज तथा दीपराज ने अलग-अलग गांव बसाये एवं बड़े भाई कलसोराव को अपना राजा (मुखिया) बनाकर अपने 84 गांवों की जागीर बसाई। जिनमें कलसोराव की सन्तानें कलस्यान चौहान देवराज के वंशज दीवड़े तथा दीपराज चौहान के वंशन दापे चौहान कहलाये। तीनों भाइयों के वंशजों ने उपरोक्त 84 गांवों में अपना विस्तार किया। आज भी चौहानों की 84 की पंचायत कहलाती है। उस समय में सबसे बड़े भाई कलसे राज के नाम पर कैराना गांव बसा। जिसे वर्तमान में कैराना तहसील तथा विधानसभा या लोकसभा क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। बाबू हुकम सिंह भी यहीं से विधायक, मंत्री और सांसद रहे हैं। उस समय वर्तमान उत्तरप्रदेश का पश्चिमी भाग जंगल था। जिसमें खेती-बाड़ी करके ये लोग बस गये। 17वीं शताब्दी में इस चौहान वंश के कुछ परिवारों को ईस्लाम धर्म जबरन स्वीकार करना पड़ा। जिससे आज 84 के गांवों में हिन्दू चौहान तथा मुस्लिम चौहान बस गये हैं। इन परिवारों में से निकलकर जिन लोगों ने गांव बसाये तथा काबिज हुए उनमें कैराना, कांधला, खंदरावली, भूरा, खरगांव, पंजीठ, बीनड़ा, बलवा, मंडावर, झिन्झाणा कस्बा, बडौली कस्बा, असीरपुर, पांवटी, सनाठी, मंडराणा, भादर, सताना आदि गांव है।

इसी चौहान खानदान से उत्तरप्रदेश के पूर्व उपमुख्यमंत्री नारायण सिंह, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बी.एस. चौहान, खादी बोर्ड के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष यशवीर सिंह चौहान हैं। उनके भाई वीरेन्द्र सिंह चौहान लम्बे समय तक उत्तरप्रदेश सरदार में मंत्री रहे हैं।

स्व. ईसमसिंह चौहान इसी खानदान में जन्मे एवं पले बड़ी शख्सियत थे। जिला आबकारी अधिकारी के पद पर राजस्थान में अपनी सेवाएं देते हुए सेवानिवृत्त हुए तथा तत्पश्चात् गुर्जर समाज सुधार व साहित्य एवं इतिहास सृजन के कार्य में निरन्तर लगे रहे।

स्व. ईसम सिंह इन्हीं 84 गाँवों के प्रसिद्ध चौहान परिवार में जन्मे थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से गुर्जर जाति को जागृत करने तथा उनके इतिहास को संजोते हुए समाज को विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाने का कार्य किया है। ईसम सिंह चौहान के द्वारा लिखी गई मुख्य पुस्तकें निम्नांकित हैं :-

1. श्री देवनारायण बगड़ावत गाथा
2. चौहान गुर्जर इतिहास के झरोखे से
3. राष्ट्रीय कालचक्र एवं तीन प
4. स्व. रामचन्द्र विकल की जीवनी
5. परछाईयाँ काव्य संग्रह
6. गुर्जर इतिहास पर लिखी गई पुस्तक जो प्रकाशित होने की स्थिति में थी किन्तु उनका स्वर्गवास हो गया, संस्थान द्वारा इस पुस्तक को शीघ्र प्रकाशित किया जायेगा।

स्व. ईसम सिंह चौहान गुर्जर समाज के विभिन्न संगठनों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय कार्यसमिति एवं भारतीय गुर्जर परिषद्, राजस्थान के अध्यक्ष का दायित्व भी उन्होंने निर्वाह किया है।

राष्ट्रीय गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व निर्वाह करते हुए उन्होंने अपने नेतृत्व में संस्थान के कार्य को राष्ट्रव्यापी स्तर पर विस्तारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समय-समय पर इतिहास कॉन्फ्रेंस व संगोष्ठियों का आयोजन करवाकर इतिहास एवं साहित्य क्षेत्र को गति प्रदान करते रहे हैं।

1. गुर्जर इतिहास एवं भाषा साहित्य शोध संस्थान द्वारा उनके नेतृत्व में वर्ष 2016-17 में राजस्थान के कोटा में इतिहास कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया।

2. राजस्थान के अजमेर जिले में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में आयोजित इतिहास में गुर्जर समाज का पुनरावलोकन विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसी प्रकार सहारनपुर इतिहास कॉन्फ्रेंस, चंडीगढ़, नोएडा, सीकर में हुई गुर्जर इतिहास कॉन्फ्रेंस में भी उनका अभूतपूर्व योगदान रहा।

ईसम सिंह चौहान की अध्यक्षता में गुर्जर इतिहास, साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान द्वारा निम्नांकित पुस्तकों का प्रकाशन करवाया गया :-

1. गुर्जर इतिहास एवं साहित्य पुस्तक
सम्पादक-ईसम सिंह चौहान, मोहनलाल वर्मा,
शैतान सिंह गुर्जर, डॉ. बी.एल. गुर्जर
2. बगड़ावत श्री देवनारायण शौर्य गाथा
लेखक- छीतर लाल कषाणा, कोटा
3. तैमूर हंता जोगराज पंवार
लेखक- डॉ. के.पी. सिंह पंवार, जांडखेड़ा सहारनपुर
4. गुर्जर प्रतिहार सम्राट मिहिरभोज
लेखक- शैतान सिंह गुर्जर
5. शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित इतिहास एवं साहित्य सम्बन्धी 850 पुस्तकों की सूची जिसका सम्पादन शैतान सिंह गुर्जर द्वारा किया गया।
6. कर्मयोगी रामगोपाल गार्ड

लेखक-मोहन लाल वर्मा के प्रकाशन में भी उनका महत्वपूर्ण मार्गदशन रहा।

इनके अलावा शोध संस्थान द्वारा उनके नेतृत्व में 4-5 पुस्तकें लिखी गई जो प्रकाशनाधीन है।

इस प्रकार स्व. ईसम सिंह चौहान एडवोकेट जिंदादिल साहित्य एवं इतिहासकार होने के साथ-साथ एक कुशल सामाजिक नेतृत्वकर्ता, प्रेरक व्यक्तित्व के धनी रहे हैं।

उनके द्वारा संग्रहित परछाईयां पुस्तक में पं. बालकृष्ण शर्मा द्वारा लिखित खण्ड काव्य की कुछ पंक्तियाँ-

क्यों गहरी निद्रा में सो रहे हो?

गुर्जरों के प्रसुप्त स्वाभिमान को जगाने वाली सिद्ध हुई है। चौहान साहब समय-समय पर सभा सम्मेलनों में इसका वाचन करके समाज की तरूणाई को झिंझोड़ने का कार्य करते थे। मुख्य पंक्तियाँ-

गुर्जर बनो तम, गर्ज कर यशोधर्मा
पुरखे को सुमर लो, राष्ट्रहित में संस्कृति
निध धर्म को फिर से संवार लो।
खोज करको मिहिर कुल की मिल जाये शायद यहीं पर।
चावड़ों के चाप से उस दुष्ट का तुम सिर कुतर लो।
दुर्व्यसनों के गर्त में क्यों पथ में कंटक बो रहे हो।
चौहान पृथ्वीराज क्यों सो गये बेखबर होकर।
घर के जयचन्दों का सिर गर काट लेते सब्र खोकर।
माँ भारती के भाल पर न दासतां का दाग होता।
सन्तति चौहान गुर्जर, न छुपते यूं मायूस होकर।
खड्ग कुंठित हो गई क्या? लड़ते जो सदियों से रहे हो।

उपरोक्त काव्य प्रवाह लम्बे हैं। यहाँ आंशिक दिया गया है। इसे ईसम सिंह जी अपनी ओजपूर्ण भाषा में वाचन करके सभा सम्मेलन में बैठे हुए सभासदों के दिल और दिमाग में अपने पूर्वजों के शौर्य की बयार बहाकर जीजीविषा के प्रति जागृत करते थे। ईसम सिंह जी इतिहासकार होने के साथ-साथ एक साहित्यकार भी रहे। उन्होंने कई कविताएँ छन्द लिखे जो गुर्जर समाज की अनमोल विरासत है। उनके प्रयासों से गठित गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान भारतवर्ष में गुर्जर इतिहास पर शोध की दृष्टि से एकमात्र रजिस्टर्ड संस्थान है। इसके गठन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

गुर्जर इतिहास, साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष ईसम सिंह चौहान, स्व. यतीन्द्र कुमार वर्मा, रतन लाल वर्मा, डॉ. दयाराम वर्मा ऐसी सोच के व्यक्ति थे जिन्होंने गुर्जर इतिहास, साहित्य पुर्नलेखन की दिशा में एक मशाल जलाने का प्रयास किया।

गुर्जर संस्कृति शोध संस्थान नोएडा द्वारा भी इस सम्बन्ध में कई बार चर्चाएँ की जाती है कुछ कार्य भी हुआ है। अखण्ड भारत गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. यशवीर सिंह इस बात को लेकर जागृत ही नहीं चिन्तित भी हैं। कई विद्वानों से वे इस विषय में चर्चा करने के साथ-साथ शोधपूर्ण पुस्तकें लिखने का आग्रह भी करते रहते हैं।

राजस्थान गुर्जर महासभा प्रदेशाध्यक्ष कालूलाल गुर्जर सहित सभी कार्यसमिति के सदस्य एवं गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान की ओर से मैं अपने इस दर्द को स्व. ईसम सिंह जी चौहान के प्रति अपनी श्रद्धांजलि एवं शब्दांजलि अर्पित करते हुए अपेक्षा करता हूँ कि स्व. ईसम सिंह जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि गुर्जर इतिहास पर शोध कार्य, संरक्षण एवं संवर्द्धन ही होगी।

आओ, हम सब मिलकर उनकी पुण्य स्मृति में इस कार्य को गति देने के लिए संकल्पबद्ध होकर पहल करें।

- शैतान सिंह गुर्जर, राष्ट्रीय महासचिव
गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान
प्रधान कार्यालय- गुर्जर छात्रावास, सीकर (राजस्थान)
मो. 9414315639

आस्था व श्रद्धा के धार्मिक स्थल नागपहाड़ को अतिशय क्षेत्र के रूप में पहचान मिले -भड़ाना

अजमेर। हर वर्ष की भाँति हरियाली अमावस्या के पावन पर्व पर पुष्कर स्थित नागपहाड़, लक्ष्मीपोळ एवं श्री देवनारायण ईंट प्राप्ति स्थल पर यात्रा के लिए जाते श्रद्धालुओं

के हाथों में श्री देवनारायण ध्वज पताकाएँ छाई रही। दिनभर पहाड़ी में भगवान श्री देवनारायण का जयकारा गूँजता रहा। गुर्जर समाज के स्त्री-पुरुष परम्परागत वेशभूषा में पहाड़ी पर चढ़ते नजर आ रहे थे। ऐतिहासिक एवं सनातन धर्म के धार्मिक स्थल पर हजारों श्रद्धालुओं ने आस्था के साथ परिक्रमा कर पुण्य अर्जित किया। राजस्थान गुर्जर महासभा द्वारा आयोजित गुर्जर आदितीर्थ नागपहाड़ परिक्रमा यात्रा में इस बार देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भड़ाना के नेतृत्व में बुजुर्ग मातृशक्ति युवाओं और बच्चों सहित हिन्दू समाज के लोगों ने सहभागिता निभाई।

भड़ाना ने लक्ष्मीपोळ क्षेत्र में भगवान देवनारायण की पाट् ईंट प्रकट स्थल पर ध्वजारोपण कर पूजा-अर्चना की। बगड़ावतों के गुरु रूपनाथ की धूणी पर भी विधिवत पूजन किया गया। भड़ाना ने इस तीर्थ को धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान दिलाने की दिशा में प्रयास करने के लिए कहा। भड़ाना ने कहा कि नागपहाड़ क्षेत्र को राज्यस्तरीय धार्मिक एवं पर्यावरणीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और आध्यात्मिक गरिमा इसे एक विशिष्ट तीर्थ और पर्यावरणीय पर्यटन स्थल बनाने योग्य बनाते हैं।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार से इस सम्बन्ध में आग्रह करके नागपहाड़ को अतिशय क्षेत्र घोषित करने के प्रयास किये जायेंगे। भड़ाना ने कहा कि लगभग 25 किलोमीटर लम्बी यह तीर्थ यात्रा अत्यन्त दुर्लभ मार्ग से होकर गुजरती है। इस पर हजारों श्रद्धालु प्रात: 4 बजे से ही यात्रा प्रारम्भ कर देते हैं। उन्होंने कहा कि अगली हरियाली अमावस तक कम से कम 5 स्थानों पर मेडिकल टीमें पीने के पानी की समुचित व्यवस्था और पुलिस बल की तैनाती सुनिश्चित की

जायेगी। साथ ही यात्रा मार्ग को सुगम बनाने के लिये कार्य किये जायेंगे। इससे महिलाएँ और बुजुर्गों के लिए यात्रा अधिक सुलभ बन सकेगी।

भड़ाना ने कहा कि यह क्षेत्र गुर्जर बगड़ावतों की कर्मस्थली रहा है। जो यहाँ गोपालन एवं गाय चराने का कार्य करते थे। लक्ष्मीपोळ से भगवान देवनारायण के मन्दिर निर्माण के लिये ईंटे यहीं से सम्पूर्ण देश में बनने वाले मन्दिरों में पाट् के रूप में प्रतिष्ठित होती है। यह इसकी पौराणिक महत्ता को

दर्शाता है। यह क्षेत्र महर्षि विश्वामित्र, अगस्त्य मुनि और राजा भर्तृहरि जैसे महान सन्तों की तपोभूमि भी रहा है।

हरियाली अमावस्या मेले में स्थानीय ग्रामीणों एवं धार्मिक संगठनों द्वारा भण्डारे जल सेवा और विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधि सामाजिक कार्यकर्ता भंवरलाल चोपड़ा, लक्ष्मण गुर्जर, नितिन गुर्जर, विकास गुर्जर, अंकित गुर्जर, रामलाल गुर्जर, राजू गुर्जर, चिताखेड़ा, विराट, टिंकू, भगवान, मनोज, काळस, कैलाश खटाणा, नरेन्द्र बागड़ी, मनीष भड़ाना, सुखपाल, सुरेन्द्र फतेहसिंह सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

मेरी भावनाओं की यात्रा...

दीपक पंड्या हिम्मतनगर

गुजराती लोक साहित्य में कवि भगा चारण मुझे अत्यंत प्रिय रहे हैं। उनकी अद्भुत रचना 'मारा वाला ने वढी ने केजो'...आज भी मैं इसे अक्सर...अक्सर...अक्सर टीवी पर सुनता रहा हूँ।

कवि भगा चारण - भावनाओं की एक अद्भुत वाणी हैं। गुजराती लोक साहित्य में कुछ ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने मंच के प्रसिद्ध कवियों के रूप में नहीं, बल्कि जन-हृदय के कवि के रूप में अपनी जगह बनाई है। भगा चारण जन-हृदय के ऐसे ही सच्चे कवि थे। उनकी कोई औपचारिक जीवनी उपलब्ध नहीं है, फिर भी उनके एक गीत से उनका नाम अमर हो गया है। जीवन की सच्चाई और भक्ति के स्वर से ओतप्रोत उनके द्वारा रचित लोकगीत आज भी लोगों के होठों पर हँसते हैं और हृदय में बसते हैं।

ओधाजी मारा वाला ने वढी ने केजो रे... - एक स्त्री की पीड़ा का सशक्त रूप लोक उत्सवों में उसका सबसे प्रसिद्ध और अक्सर सुना जाने वाला गीत है- 'ओधाजी मारा वाला ने वढी केजो रे...' यह गीत एक पाटवी स्त्री के शोकाकुल हृदय की प्रतिध्वनि है। उसका पति मरुभूमि में चला गया है और वापस नहीं लौटा है- कवि ने एक पतिव्रता स्त्री के जीवन में चलने वाले संघर्ष, पीड़ा और आत्म-समर्पण का अच्छा वर्णन किया है। ओधाजी को संबोधित करते हुए, वह स्त्री स्वयं, वापस न आने की पीड़ा से, विनती करती है कि वह उसके पिता से बात करके उसे बताए।

यह गीत न केवल उसके पति से वियोग को व्यक्त करता है, बल्कि समाज में एक स्त्री की विनम्र किन्तु सशक्त भूमिका को भी दर्शाता है। भागाचरण के शब्द भावनाओं की गहराई तक पहुँचते हैं। जब लोक गायक इस गीत को भजनों या कच्छी-काठियावाड़ी रासगीत के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं, तो श्रोता भक्ति और भावना दोनों से सराबोर हो जाते हैं। उनका यह गीत आज भी गाँव के उत्सवों, लोक मेलों, मंदिरों और पारिवारिक समारोहों में जीवंत है। कार्य।

भगाचरण के साहित्य में प्राय: स्त्री पात्रों- विशेषकर विवाहित स्त्री- का सजीव चित्रण मिलता है। उन्होंने स्त्री की भक्ति, समर्पण, वीरता और सहनशीलता को अपनी कविताओं का मुख्य केंद्र बनाया है। यह गीत एक विवाहित स्त्री के रूप में लोक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है - जो शोक में है, फिर भी शक्ति के साथ जी रही है और अपने पति की महिमा के लिए आराधना करने को तत्पर है।

कवि भगा चारण की कविताएँ सरल हैं - परन्तु जीवन के गहनतम अर्थों से परिपूर्ण हैं। उन्होंने आलंकारिक भाषा के स्थान पर जीवंत, कथात्मक भाषा का प्रयोग किया है। वह भाषा ऐसी है जिसे गाँव का आम आदमी भी समझेगा, महसूस करेगा और अपनी कहेगा। उन्होंने जीवन के वास्तविक दुखों से उत्पन्न कविता का आनंद लिया और उसे दूसरों के हृदय तक पहुँचाया।

उनका साहित्य आज भी पुस्तकों में कम, बल्कि जनमानस में अधिक जीवित है। ऐसी रचनाएँ जो प्रकाशित न होने पर भी स्मरणीय हैं - उन्होंने ऐसी महिमा प्राप्त की है। हमें लोक कवि भगाचरण को गुजराती साहित्य का एक ऐसा प्रकाश स्तंभ मानना चाहिए जिन्होंने संस्कृति, भक्ति और भावना, तीनों को मधुर शब्दों में पिरोया है।

भगा चारण एक कुशल कवि थे। गुजराती लोक साहित्य के ऐसे कवि जिन्होंने भाषा से ज़्यादा भावनाओं को महत्व दिया। उनकी कविताओं में भक्ति भावना और जीवन के सत्य का प्रकाश है जो हृदय के अंधकार में दीप जलाता है।

आज के भौतिक युग में भी, उनके गीत मनुष्य को आध्यात्मिक शांति प्रदान करते हैं और उसकी इंद्रियों को जागृत करते हैं। यह रचयिता की नहीं, बल्कि इंद्रियों की वाणी है – और वह वाणी आज भी जीवंत, अमर है।

'ओधाजी मारा वाला वढी ने केजो रे...' – यह लोकप्रिय गुजराती लोकगीत लगभग हर गुजराती लोकगीत के हृदय में बसा है। इस गीत के मूल अर्थ और संदर्भ को लेकर कई मतभेद हैं, क्योंकि इसे लोगों ने एक लोकगीत के रूप में जिया है– न कि शास्त्रीय रूप में रचे गए किसी ग्रंथ के रूप में। इसलिए, इस प्रश्न का उत्तर भी अस्पष्ट है।

पहली परिभाषा– एक विवाहित स्त्री और उसके पति के वियोग का संदर्भ (लोक जीवन पर आधारित)

दूसरी परिभाषा– कृष्ण, राधा और उद्धव का संदर्भ (आध्यात्मिक परिभाषा)

कुछ लोग और भक्त अनुयायी यह भी मानते हैं कि यह गीत राधा के वियोग में उनकी पीड़ा को दर्शाता है। श्रीकृष्ण भक्ति काव्य की परंपरा के अनुसार, राधा–कृष्ण के विरह और संवाद के अनेक गीत और पद लोकगीतों में मिलते हैं। अत: यह भी मान्यता है कि इस गीत को आध्यात्मिक–भक्तिपूर्ण अर्थ से भी देखा जा सकता है।

इस गीत का मूल अर्थ अस्पष्ट है :

यह ग्रामीण जीवन में पति के वियोग में दुखी पत्नी का गीत भी है, और साथ ही इसे राधा–कृष्ण के भक्ति संदर्भ में भी समझा जाता है। दोनों अर्थ एक साथ मान्य रहते हैं अर्थात् लोकगीतों का लचीलापन और सौंदर्य।

कवि और उनकी रचनाओं के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं, लेकिन उनकी यह अद्भुत रचना श्रोता को एक विशिष्ट भावनात्मक धरातल पर स्थापित करती है जिसे नकारा नहीं जा सकता। अनेक भजनकारों और गायकों ने अपनी आवाज़ देकर इस रचना को अमर बना दिया है, जिनमें महान गायिका लता मंगेशकर ने भी अपनी मधुर आवाज़ देकर भाग–चरण को अमर कर दिया है।

श्री देवनारायण दिव्य धाम प्राप्ति उर्ध्व जीवन यात्रा

सप्त गुरुत्तर गुरु वीर गुर्जर : गुरु शिखर यात्रा

गुर्जर देव चेतना ज्योतिर्मय पुरुष चैतन्य पुरुष की यात्रा

यथार्थ में हमारा आत्म एक ज्योति पुंज है। परंतु इसका स्वीकार्य कैसे कहूं। आचार्य महाप्रज्ञ ने एक दृष्टांत दिया है :– हम इस दृष्टांत से समझने का प्रयास करें।

एक व्यक्ति कमरे में गया। कमरे में भीतर बिजली जल रही थी। कुछ ही क्षणों के पश्चात बिजली चली गई। अंधेरा छा गया। कुछ भी नहीं दिख रहा था। बाहर खड़े व्यक्ति ने पूछा– भीतर कौन है?

उसने कहा मैं हूं। मैं हूं यह कैसे जाना।

यदि आत्मा ज्योतिपुंज नहीं है, दीपक की भांति ज्योतिर्मय नहीं है तो कैसे दिखा कि मैं हूं।

कितना भी सघन अंधकार हो, व्यक्ति चाहे भूगृह में खड़ा हो, किंतु मैं हूं–यह दीप कभी नहीं बुझता है।

यह सदा जलता रहता है। मैं हूं इतना सा प्रकाश पर्याप्त है। यह समझने के लिए की भीतर कोई ज्योतिपुंज है। यह प्रकाश की एक किरण पर्याप्त है। यदि हमारी यात्रा ज्योति पुंज की दिशा में चले, हमारे प्राण की सारी ऊर्जा उसी और प्रवाहित हो तो एक न एक दिन उस ज्योति पुंज का साक्षात्कार अवश्य होगा।

पूजा उपासना ध्यान साधना के बल पर हमारे भीतर उठने वाले स्पंदन की गति में रूपांतरण घटित होता है। यह घटित होने पर ज्योति पुंज की दिशा में यात्रा गति प्राप्त करती है। अंतर्मन अंतरंग ज्योति पुंज की वह रश्मि जो 'मैं हूं'–इतनी सी प्रतीत होती थी वह ज्योतिपुंज में मिल जाती है और तब 'मैं हूं'। बदल जाता है और केवल 'है' शेष रह जाता है। मैं की बात समाप्त हो जाती है। जो रश्मियां बिखरी पड़ी थी, जो एक जालीदार ढक्कन से छन–छन कर बाहर फैल रही थी, वे सारी रश्मियां सिमटकर ज्योति पुंज में विलीन हो जाती है। उस समय ज्योति पुंज के साक्षात्कार का प्रश्न भी समाप्त हो जाता है। वहां कौन ज्योतिपुंज और कौन 'मैं' यह भेद मिट जाता है। सब कुछ दिव्य ज्योतिर्मय बन जाता है। नारायण ज्योति स्वरूप 11 कला अवतार भगवान श्री देवनारायण पूजा उपासना का यही फलितार्थ है। इसे ही गुरुत्तर गुरु वीर गुर्जर= गुरु शिखर यात्रा कहा गया है। यही श्री देवनारायण दिव्य धाम गुर्जर देव मंदिर दर्शन है।

एक समर्पित बहु शैली चित्रकार : भैरूलाल स्वर्णकार

प्रस्तुति : हेमन्त सिंह

चित्रकला सभी कलाओं में सर्वश्रेष्ठ है। चित्रकला के अभ्यास से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। घर पर चित्र बनाने से बढ़कर कोई शुभ कार्य नहीं है। यद्यपि भारत में भित्तिचित्र संस्कृति दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व (उदाहरण के लिए, अजंता के भित्तिचित्र) से चली आ रही है, शेखावाटी भित्तिचित्र 16वीं शताब्दी की जयपुर और मुगल चित्रकला शैलियों से प्रभावित थे, ये चित्र फारसी कला से प्रेरित थे।

भीलवाड़ा, राजस्थान के समर्पित बहु-शैली चित्रकार, भैरूलाल स्वर्णकार, जो 1995 से शेखावाटी की पोद्दार हवेली, नवलगढ़ के जीर्णोद्धार कार्य में लगे हुए हैं, बताते हैं कि परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण वे 11वीं कक्षा तक ही पढ़ सके। जीव विज्ञान की पढ़ाई के दौरान, प्रायोगिक फाइलों में जानवरों के चित्र बनाकर चित्रकला में उनकी रुचि जागृत हुई। जीविकोपार्जन के लिए भैरूलाल ने राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में दीवारों पर विज्ञापन बनाकर आठ साल तक काम किया। वे सिर्फ आजीविका के लिए विज्ञापन का काम कर रहे थे, लेकिन इससे उनका कलाकार मन नहीं भर रहा था।

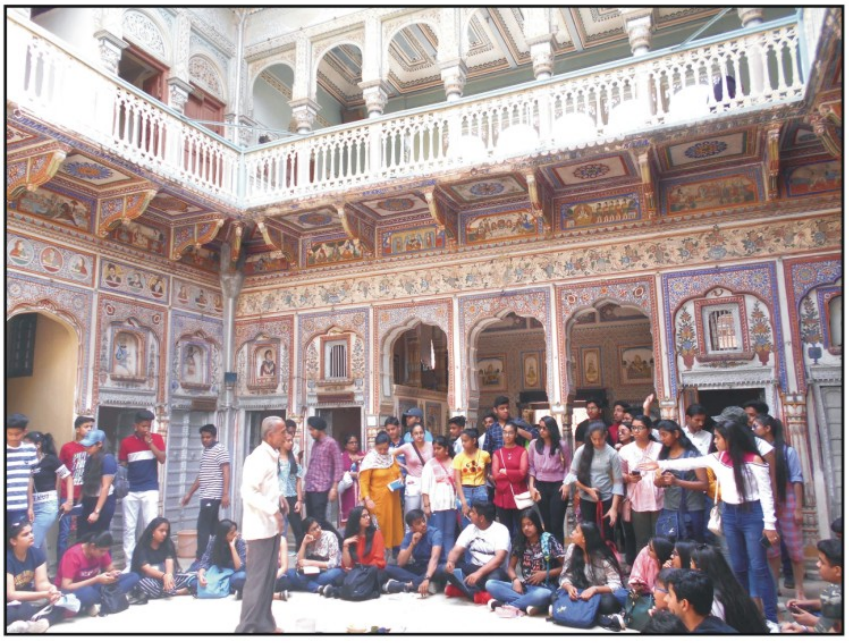

इसी बीच, इस काम को करते हुए उन्हें अपने प्रेरणास्रोत नानाजी (दादा) श्री किशन की यह बात याद आई कि अगर जीवन में कुछ अनोखा करोगे, तभी यह दुनिया तुम्हें सम्मान देगी। तब उन्होंने एक गुरु की तलाश शुरू की। उनकी यह तलाश अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त और राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त चित्रकार बद्रीलाल से मिलकर पूरी हुई। उनके मार्गदर्शन में, भैरूलाल ने रेशमी कपड़े, कागज, चमड़े, हाथीदांत आदि की सतहों पर 13 साल तक काम किया और मुगल, कांगड़ा, बरौली, मेवाड़, शेखावाटी, किशनगढ़, आमेर, बूंदी, नाथद्वारा शैलियों में विविध विषयों पर अनेक लघु चित्र बनाए। इस दौरान उन्होंने अपने गुरु से लघु कला की बारीकियाँ भी सीखीं।

चित्रकार भैरूलाल

राजस्थान के लगभग 60 मंदिरों के साथ-साथ हरिद्वार स्थित विश्व प्रसिद्ध 'भारत माता मंदिर' में भी उनकी चित्रकारी ने उनके सुंदर चित्रों के रंग बिखेरे हैं। अधिकांश मंदिरों में उन्होंने विशेष रूप से हिंदू पौराणिक कथाओं, धर्मग्रंथों और भारतीय संस्कृति में वर्णित कथाओं पर आधारित चित्र बनाए हैं। इसके अलावा, उन्होंने बारहमास, रागमाला, गीत गोविंद और पंचतंत्र में वर्णित कथाओं पर आधारित

चित्रकारी करके अपनी कला का परिचय दिया है। उन्होंने खनिजों और वनस्पतियों, बहुमूल्य पत्थरों के साथ-साथ शुद्ध चांदी और सोने से बने रंगों का भी प्रयोग किया है।

भैरूलाल को अपने चित्रकारी कौशल पर उस समय गर्व हुआ जब भारत सरकार ने 2011 में उनके द्वारा बनाए गए गुर्जर समाज के प्रमुख पूज्य भगवान देवनारायण के चित्र पर 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया। इस चित्र में भगवान देवनारायण घोड़े पर सवार हैं, आगे सफेद और पीछे काले रंग के भैंरूजी अपने सवार के साथ, नीचे नाग देवता, जन्म और विवाह का दृश्य, सूर्य और दोनों ओर दो चाँद दिखाए गए हैं, जबकि डाक टिकट में केवल घोड़े पर सवार भगवान देवनारायण और साँप को दिखाया गया है। पीछे की ओर प्राकृतिक दृश्य है।

उन्होंने मुगल गार्डन पिंजौर, सूरजकुंड स्थित हस्तशिल्प एवं पर्यटन मेला स्थल, मुंबई स्थित हरियाणा के सात सितारा होटल ग्रैंड हयात और मुंबई स्थित पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल वीरेंद्र शाह के घर में गुरुजी के अधीन काम किया। 2002 में अमेरिका में आयोजित सिल्क रोड लोक जीवन महोत्सव के लिए उन्होंने रेशमी कपड़े की सतह (67X17 फीट) पर फारसी, चीनी और भारतीय विभिन्न शैलियों में लघु चित्रों का एक विशाल कार्य किया और मुंबई के छत्रपति शिवाजी हवाई अड्डे के टर्मिनल-2 पर (40X5 फीट) जुलूस का एक विशाल कार्य किया। श्री भैरूलाल की सूक्ष्म कलाकृतियों में चावल पर गणेश जी, चित्तौड़गढ़ का विजय स्तम्भ, एक इमली के बीज पर लोकसभा अध्यक्ष का स्वर्ण चित्र, एक चावल पर स्वर्ण से बना राष्ट्रीय प्रतीक, अशोक स्तंभ और चने की दाल पर भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का स्वर्ण चित्र शामिल हैं। उन्होंने महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी आदि राष्ट्रीय नेताओं के तैल रंगों में आदमकद चित्र भी बनाए हैं, जो कई प्रतिष्ठित समारोहों की शोभा बढ़ा चुके हैं।

उन्होंने बताया कि हवेलियों और मंदिरों में भित्ति चित्र बनाने का काम बहुत थका देने वाला होता है। कलाकृतियाँ बनाते समय चित्रकार को उल्टा होकर चित्र बनाना पड़ता है। यह काम बहुत श्रमसाध्य और कठिन होता है और इसमें बहुत समय भी लगता है। इसमें चित्रकार की आँखों और गर्दन में दर्द होने लगता है, और ऊँचे लकड़ी के आधार से नीचे गिरने का खतरा भी बना रहता है।

चित्रकला की साधना में लीन इस कलाकार को प्रमाणपत्र और पुरस्कारों के रुप में बहुत सम्मान मिला है। इसी कड़ी में 1986 में, चावल पर अशोक स्तंभ के लघु चित्रांकन के लिए उन्हें भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी द्वारा सम्मानित किया गया। 1987 में, भारत के महामहिम राष्ट्रपति आर. वैकटरमन और 1988 में, उपराष्ट्रपति शंकरलाल शर्मा ने उन्हें कांच पर स्वर्ण से निर्मित 'विजय स्तंभ' के लघु चित्रांकन के लिए सम्मानित किया था और 1994 में जब श्री शंकरदयाल शर्मा राष्ट्रपति बने, तो चित्रकार भैरूलाल को बसौली शैली में बनाए गए लघुचित्रांकन के लिए नकद पुरस्कार दिया गया। इसके अलावा, उन्हें भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत, जगत गुरु शंकराचार्य, सव्यमित्रानंद जी, पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री शीशराम ओला, पूर्व राज्यपाल ओपी मेहरा और बलिराम भगत, बॉम्बे शेरिफ, कला संगम मंडपम डेकोरेटर्स और स्वर्णकार समाज से नकद पुरस्कार, प्रशंसा पत्र और स्मृति चिह्न भी प्राप्त हुए हैं।

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों और टीवी चैनलों में पेंटिंग

चैनल उनकी कलाकृतियों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों/पत्रिकाओं और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय टीवी चैनल सहित भैरूलाल की कृतियाँ फ्रांस और स्पेन के राष्ट्रीय चैनलों के साथ-साथ 'रंगोली दूरदर्शन' और ईटीवी राजस्थान पर भी

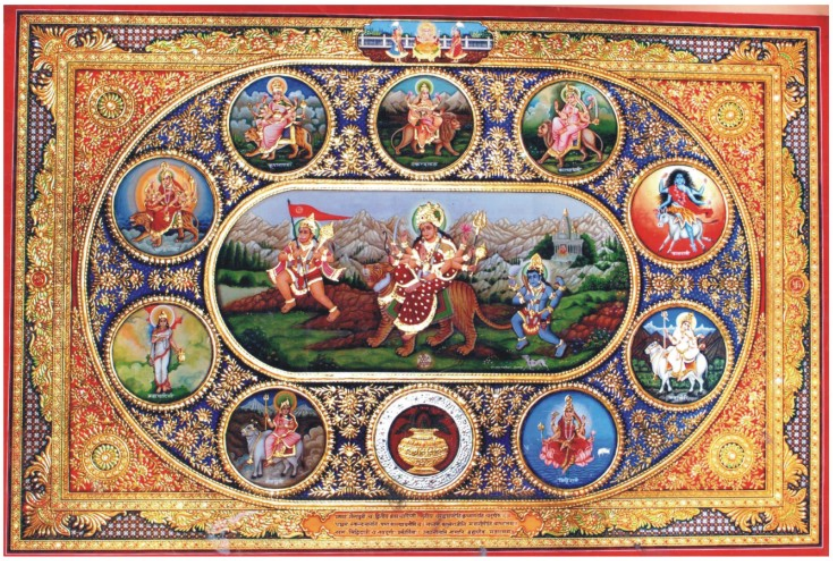

प्रसारित हो चुकी हैं। उनकी बनाई कलाकृतियाँ अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड, इटली, हॉलैंड, रूस, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, नेपाल, जर्मनी, श्रीलंका आदि देशों में भित्तिचित्र कला का प्रसार कर रही हैं।

डॉ. रामनाथ आर.पोद्दार हवेली संग्रहालय नवलगढ़ में माइक्रोसॉफ्ट कंप्यूटर कंपनी की एक विज्ञापन फिल्म बनाई गई, जिसमें उनके द्वारा बनाई गई दो उत्कृष्ट कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गईं। इसी प्रकार, चीनी फिल्म हिमालय सिंह की शूटिंग भी हुई, जिसमें उनके द्वारा बनाई गई नाचते हुए मोर की कलाकृति दिखाई गई। उनके काम को अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका में जगह मिली, घुड़सवारी की पेंटिंग 'पॉइंट डी व्यू' - पेरिस 2002, भारत में भगवान हनुमानजी, भगवान विष्णुजी और देवी लक्ष्मीजी की पेंटिंग, राजस्थान में राधा-किशन की पेंटिंग- दिल्ली और आगरा, 'शुभ यात्रा' -एयर इंडिया-2017, डिस्कवर राजस्थान पर्यटन विभाग राजस्थान, सदीनामा-कोलकाता, वॉयेज-मुंबई में घुड़सवार की पेंटिंग, जनसत्ता-नई दिल्ली, दिल्ली दूरदर्शन, ईटीवी-राजस्थान-जयपुर 'आठ गोपियाँ' तेउवल तेवुद जनरल, द कलर्स ऑफ राजस्थान गति पत्रिका में शेखावाटी फ्रेस्को और हवेली के मिलन स्थल के चित्र, आठ गोपियाँ, रासलीला, नव दुर्गा (शेखावाटी शैली), 'बारामदे में आनंदी लाल पोद्दार ट्रस्ट की पोद्दार सामाजिक प्रतिबद्धताएँ और आठ गोपियाँ - 'मारवाड़' में मिलन स्थल का चित्र, 'अंकुर' में मेहराब डिजाइन और मकर संक्रांति के चित्र' को इंदर ज्ञानदेश पत्रिका में स्थान मिला। डॉ. रामनाथ आनंदी लाल पोद्दार हवेली म्यूजियम गाइड में 'अर्धनारीश्वर', 'दो घुड़सवार', 'हनुमान जी', 'माता गायत्री', 'गणेश जी', 'तीज की सवारी', 'कालबेलिया', 'नृत्य', 'सामने बरामदा', 'भैरू जी', 'ढोला मारू', 'राव शेखाजी' के चित्र दर्शाए गए हैं।

इस अनुभवी कलाकार में कला की बारीकियों की गहन समझ और लघु कला के लिए रंग संयोजन के चयन की क्षमता के संदर्भ में उच्च कलात्मक समझ और उपलब्धियाँ हैं। वे मनाए जाने वाले सभी विशिष्ट आयोजनों का जीवंत विवरण और त्योहारों व नृत्यों की जीवंत मुद्राओं को लघु चित्रों में प्रस्तुत करते हैं। इससे पता चलता है कि वे न केवल एक कलाकार हैं, बल्कि उन्हें त्योहारों और नृत्यों सहित भारतीय संस्कृति और परंपराओं का गहन विद्वत्तापूर्ण ज्ञान है।

शेखावाटी और अन्य कला विद्यालयों के विकास के लिए उन्होंने सैकड़ों छात्रों को प्रशिक्षित भी किया है। उनका मुख्य उद्देश्य शेखावाटी क्षेत्र की हवेलियों और मंदिरों का संरक्षण, भित्ति चित्रों का पुनरुद्धार, इस क्षेत्र के लोगों में उपेक्षित सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता पैदा करना और अपनी कला के माध्यम से इन हवेलियों के अज्ञात स्वामियों को उनकी जड़ों से जोड़ना है।

गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान द्वारा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर गुर्जर लोक संस्कृति एवं इतिहास की पहुँच बनाने के लिए प्रस्तावित कार्य योजना

गुर्जर लोक संस्कृति एवं इतिहास को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने के लिए एक संगठित कार्य योजना, जिसे किसी संगठन, युवा समूह, संस्था या सांस्कृतिक मंच के माध्यम से कार्यान्वित किया जा सकता है।

अभियान योजना : गुर्जर गौरव- विश्व मंच की ओर

उद्देश्य (Objective) : गुर्जर समाज की संस्कृति, इतिहास, वीरता और लोक परंपराओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाना।

वैश्विक समुदाय को गुर्जर समाज के योगदान, कला, भाषा और विरासत से परिचित कराना।

अभियान के चरण (Campaign Phases) :-

चरण 1 :

तैयारी और आधार निर्माण (1-2 माह)

1. एक कोर टीम बनाना : इतिहासकार, कलाकार, आईटी विशेषज्ञ, सोशल मीडिया मैनेजर्स, और भाषाविदों को शामिल करें।

2. सामग्री संकलन :

-ऐतिहासिक दस्तावेज

-लोकगीत/नृत्य/पहनावे की जानकारी।

-प्रमुख वीरों की गाथाएं (जैसे सम्राट मिहिर भोज, पृथ्वीराज चौहान)।

3. लक्ष्य देशों की पहचान : जहाँ गुर्जर प्रवासी समुदाय हैं (यूके, यूएई, यूएसए, कनाडा आदि)

चरण 2 :

डिजिटल प्रचार (3-6 माह)

1. वेबसाइट / ब्लॉग निर्माण :

बहुभाषीय वेबसाइट जिसमें इतिहास, त्योहार, भोजन, नृत्य, वेशभूषा, आदि का संकलन हो।

2. यूट्यूब सीरीज :

गुर्जर गौरव नामक डॉक्यूमेंट्री/वीडियो सीरीज (5-10 मिनट की एपिसोड)

3. सोशल मीडिया अभियान :

हैशटैग्स : #GurjarPride #GurjarCulture #GurjarToGlobe

-Facebook, Instagram, Twitter, TikTok पर नियमित पोस्टिंग।

डॉ. दक्षा जोशी 'निर्झरा'

-Reel/shorts : पारंपरिक पहनावे, व्यंजन, तीज-त्योहार।

4. ऑनलाइन वर्कशॉप / वेबिनार्स :

विश्व के इतिहासकारों, युवाओं और कलाकारों के साथ संवाद।

चरण 3 : अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सहभागिता (6-12 माह)

1. संस्कृति महोत्सव में भागीदारी :

भारत सरकार/प्रवासी भारतीय दिवस, ICCR, UNESCO या स्थानीय दूतावासों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में गुर्जर कला प्रस्तुत करें।

2. गुर्जर दिवस / सप्ताह :

-प्रमुख शहरों में गुर्जर हैरिटेज सप्ताह मनाएं - प्रदर्शनी, नृत्य, भोजन, पहनावे का प्रदर्शन।

-गुर्जर NRI नेटवर्क :

प्रवासी गुर्जरों को जोड़कर ग्लोबल गुर्जर फोरम बनाएँ, ताकि वे स्थानीय स्तर पर भी योगदान कर सकें।

चरण 4 :

शैक्षणिक और साहित्यिक विस्तार (सतत प्रक्रिया)

1. पुस्तक और ई-बुक प्रकाशन :

-बाल साहित्य -कॉमिक्स (गुर्जर वीरों पर)

-रिसर्च जर्नल/पेपर।

2. कॉलेज/विश्वविद्यालयों से समन्वय :

गुर्जर इतिहास पर शोध को बढ़ावा देना

3. गुर्जर भाषा/बोलियों का संरक्षण :

-गाने/कविताएँ संग्रह करना।

-लोककथाओं का संकलन एवं अनुवाद।
-प्रचार के माध्यम (Tools & Channels) :
-माध्यम कार्य
-वेबसाइट जानकारी का संग्रह और वैश्विक पहुँच।
सोशल मीडिया में वैश्विक प्रचार, युवाओं को जोड़ना
यूट्यूब दृश्य माध्यम से प्रभाव।
पुस्तकें / ई-बुक्स शैक्षणिक/साहित्यिक योगदान
उत्सव / महोत्सव प्रत्यक्ष सांस्कृतिक प्रस्तुति।
-संभावित सहयोगी- (Partners & Supporters) :
-ICCR (Indian Council for Cultural Relations)
-Ministry of Culture (India)
-Indian Embassies Abroad
प्रख्यात गुर्जर नेता / कलाकार / लेखक
प्राइवेट ब्रांड्स / CSR पार्टनर।

गुर्जर गौरव अभियान का उद्देश्य सिर्फ पहचान बनाना नहीं, बल्कि संस्कृति की जीवंतता को सहेजते हुए उसे विश्व के मंच तक ले जाना है। यह अभियान गुर्जर समाज के युवाओं, कलाकारों, बुद्धिजीवियों और नेतृत्वकर्ताओं के लिए एक एकजुट मिशन हो सकता है।

गुर्जर लोक संस्कृति एवं इतिहास को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने के लिए एक सुव्यवस्थित, रणनीतिक और रचनात्मक प्रयास की आवश्यकता है।

नीचे कुछ व्यावहारिक और प्रभावशाली उपाय दिए गए हैं, जिनके माध्यम से गुर्जर संस्कृति को वैश्विक मंच पर स्थापित किया जा सकता है।

1. डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करें :-

-यूट्यूब चैनल/वेब सीरीज : गुर्जर संस्कृति, रीति-रिवाज, लोक नृत्य, भोजन, इतिहास, वीरगाथाएं आदि पर डॉक्यूमेंट्री, शॉर्ट फिल्में बनाकर वैश्विक दर्शकों के लिए प्रस्तुत की जा सकती हैं।

-सोशल मीडिया प्रचार : इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर, और टिकटॉक जैसे मंचों पर नियमित कंटेंट डालें- जैसे पारंपरिक वेशभूषा, गीत, त्यौहार आदि।

-ब्लॉग और वेबसाइटें : गुर्जर समाज पर केंद्रित ब्लॉग/वेबसाइट बनाएं जिसमें इतिहास, महान व्यक्तित्वों, त्योहारों, भाषा आदि का विवरण हो।

2. अनुवाद एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में प्रस्तुतिकरण :

-गुर्जर इतिहास और संस्कृति पर आधारित सामग्री को अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच जैसी वैश्विक भाषाओं में अनुवाद करें।

-यह इतिहासकारों, शोधकर्ताओं और विदेशी पाठकों के लिए समझना आसान बनाएगा।

3. अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सवों में भागीदारी :-

-गुर्जर नृत्य, गायन, वाद्ययंत्र, आदि को अंतरराष्ट्रीय फोक फेस्टिवल्स में प्रस्तुत करें।

-गुर्जर भोजन (जैसे खिचड़ी, बाटी, लापसी आदि) को फूड फेस्ट में प्रदर्शित करें।

4. गुर्जर समुदाय का अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क तैयार करें :-

-NRG (Non-Resident Gurjar) को जोड़कर अंतर्राष्ट्रीय गुर्जर संगठन बनाएं।

-प्रवासी गुर्जर समुदाय स्थानीय संस्कृति आयोजनों में अपनी विरासत को प्रदर्शित करें।

5. एकेडमिक और शोध स्तर पर कार्य :-

-यूनिवर्सिटी स्तर पर गुर्जर इतिहास पर रिसर्च पेपर्स प्रकाशित कराएं।

-गुर्जर वीरों (जैसे मिहिर भोज, सम्राट नागभट्ट, पृथ्वीराज चौहान से जुड़े) पर सेमिनार, वेबिनार आयोजित करें।

6. प्रसिद्ध व्यक्तित्वों और प्रभावशाली माध्यमों से प्रचार:

-फिल्म, संगीत या कला क्षेत्र से जुड़े गुर्जर प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करें कि वे अपनी संस्कृति को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करें।

-इंफ्लुएंसर/सेलिब्रिटी सहयोग के जरिए जागरूकता फैलाई जा सकती है।

7. प्रिंट और पब्लिशिंग :-

-गुर्जर संस्कृति पर आधारित पुस्तकों, कॉमिक्स, और ई-बुक्स का प्रकाशन करें।

-बच्चों और युवाओं को ध्यान में रखकर रोचक सामग्री तैयार करें।

गुर्जर संस्कृति में अपार ऐतिहासिक गौरव, लोक परंपराएँ और वीरता की परंपरा है। इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने के लिए डिजिटल, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, और सामाजिक सभी माध्यमों का एकीकृत प्रयोग आवश्यक है। यदि यह कार्य संगठित तरीके से किया जाए, तो गुर्जर समाज की पहचान और सम्मान विश्वस्तर पर और अधिक ऊँचाई प्राप्त कर सकती है।

गुर्जर इतिहास-भाषा एवं साहित्य विषय पर शोध एवं पुर्नलेखन समय की आवश्यकता

हमारे सामाजिक जीवन में एक लोकोक्ति बहु प्रचलित है- अधजल गगरी छलकत जाए।।
ओर बहुतेरे जोगी मठ उजाड़े।

एक विद्वान ने कहा है कि जो बोलता है, वह जानता नहीं और जो जानता है- वह बोलता नहीं।

धर्म सनातन तत्व है- धर्म की ही निर्मिती मनुष्य है। यहां यह दृष्टव्य है कि धर्म हम में हैं - हमसे धर्म है। पूजा पाठ एवं मंदिर आदि तो धर्म के सत्य तक पहुंचने के निमित्त मात्र हैं। चाहे कैसी भी राजनीतिक निष्ठा किसी की भी हो वह है - मनुष्य के लिए ,मनुष्य राजनीति के लिए नहीं है, इस बात को हमें भूलना नहीं चाहिए। हमारा लक्ष्य इतिहास में गुर्जर समाज का पुनरावलोकन करना है। जिसकी जैसी दृष्टि है, उसे व्यक्ति और वस्तु उसी रूप में दिखाई देते हैं, यथार्थ में व्यक्ति और वस्तु अपने मूल स्वरूप में जैसे हैं वैसे हैं। हम हमारे लक्ष्य तक पहुंचने के बजाय केवल मात्र मार्ग के लिए झगड़ते हैं कि यह मार्ग कच्चा है और यह पक्का है। यह किसने बनाया है और यह किसने नहीं बनाया है, इन व्यर्थ की बातों में ही हम उलझे रहते हैं।

गुर्जर इतिहास भाषा साहित्य शोध संस्थान का अध्ययन इस विषय पर केंद्रित है- इतिहास भाषा और साहित्य परस्पर पूरक हैं -भाषा के बिना साहित्य और इतिहास की रचना नहीं हो सकती है। यह हमारे पूर्वजों का गौरव है।

उन्होंने इतिहास लिखा नहीं लेकिन इतिहास रचा है उन्होंने जो इतिहास रचा है, उसे हमें खंडहरों में पुरा महत्व के दर्शनीय स्थलों में चाहे वह ऐतिहासिक स्मारक हो चाहे मंदिर हो, या कोई देव प्रतिमा हो उन सब में खोजना है।

हमारे पूर्वजों के काल में जिस साहित्य का सृजन हुआ है ,उसमें से हमें हमारा इतिहास खोजना है।

यह लौकिक सत्य है- मनुष्य को किसी भी कार्य में प्रवृत्त कराना सहज नहीं होता। हमारे पास हमारे आराध्य श्री देवनारायण हैं- जिन्होंने महाभारत युग के पश्चात भारत वर्ष की धर्मपरम्परा में जो न्यूनता आई उनका खंडन करते हुए युगधर्म का प्रबोध दिया है। हमें इसे भारत में प्रचलित दर्शनों के क्रम में प्रतिपादित करने की आवश्यकता है। हमारे पास अपनी भाषा है- जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण श्री देवनारायण पढ़ लोकवार्ता है, जिसका प्रतीकार्थ पराऽपरा वाणी है, जिसमें संपूर्ण भारत के श्रुति स्मृति और धर्मशास्त्र सृजित हुए हैं। इससे बढ़कर हमारे लिए हमारे पूर्वजों द्वारा विरासत में छोड़ी हुई निधि और क्या हो सकती है? यदि हम उसे संभाल ना सके तो इसमें दोष हमारा है।कोई यह कह सकता है की हम श्री देवनारायण को क्यों माने? हमें इससे क्या लाभ होगा। इसका उत्तर यह है कि श्री देवनारायण स्वयं का प्रबोध स्वरूप बहुमूल्य रत्न देने वाले हैं, जिसको स्वयं का प्रबोध करना है -वह व्यक्ति श्री देवनारायण को माने। कहने का अर्थ यह है कि मनुष्य लाभ के बिना किसी भी कार्य को नहीं करता है, यह हमें सर्वत्र दिखाई देता है। जिन्हें अपने पूर्वजों का गौरव पुन: स्थापित करना है वह हमारे साथ चलें जिन्हें नहीं करना है वह अपने घर बैठे।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि भारतवर्ष में महाभारत काल पश्चात् धर्म शास्त्रों एवं अर्थ शास्त्रों में भारतवर्ष का इतिहास अंतर्निहित है। जिसे रूपको और अलंकारों में रचा गया है। भविष्य पुराण, पद्मपुराण, नील मत पुराण, और हरिवंश पुराण में वंशो का उल्लेख है। सूर्य चंद्र अग्नि चौहान इत्यादि वंशों के इतिहास को और गुर्जर उत्पत्ति को खोजने के लिए हमें इन धर्म शास्त्रों को खंगालना तो होगा। इनसे परहेज करके हम सत्य तक नहीं पहुंच सकते हैं। इतिहासकारों की दृष्टि से इतिहास को जानने के लिए दो साधन होते हैं।

प्रथम-साहित्यकारों की कृतियां तथा दूसरा विभिन्न कलाकारों की कृतियां, हमारे पूर्वजों का इतिहास साहित्यिक तथा पुरातात्विक सामग्री से ही खोजा जा सकता है। साहित्यिक सामग्री को सुविधा के लिए इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है। 1. धार्मिक साहित्य तथा 2. इह लोक परक साहित्य। धार्मिक साहित्य भी दो प्रकार का है-क-ब्राह्मण ग्रंथ 'ख' अब्राह्मण ग्रंथ-बौद्ध तथा जैन ग्रंथ। ब्राह्मण ग्रंथों को

भी श्रुति तथा स्मृति दो भागों में विभाजित किया गया है। श्रुति के अंतर्गत चारों वेद, ब्राह्मण तथा उपनिषदों की गणना की जाती है और स्मृति में दो महाकाव्य में रामायण और महाभारत, पुराण तथा स्मृति आती है। इह लोक साहित्य निम्नांकित प्रकार हैं- 1. ऐतिहासिक, 2. अर्ध ऐतिहासिक, 3. विदेशी विवरण, 4. जीवनियां, 5. कल्पना प्रधान एवं गल्प साहित्य जिसे विशुद्ध साहित्य कह सकते हैं।

उपरोक्त साहित्यिक सामग्री के अतिरिक्त पुरातात्विक सामग्री जिनमें कुछ तो अपने वास्तविक रूप में प्राप्त हैं और कुछ उत्खनन द्वारा प्राप्त हुई हैं। अभी तक बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री भूगर्भ में समाई हुई है जिनकी खोज जारी है। पुरातात्विक सामग्रियों को मुख्यत: तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। 1. अभिलेख-2. प्राचीन स्मारक तथा-3. मुद्राएं।

हमें हमारे लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए यह भी स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि पिछले हजारों वर्ष में हमारे पूर्वजों के द्वारा निर्मित ऐतिहासिक साक्ष्यों को विदेशी आक्रांता ओं द्वारा नष्ट भ्रष्ट किया गया है। हमारे पूर्वजों ने इन साक्ष्यों को लोकवार्ता साहित्य में संजोया है हमें अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए लोक साहित्य से ऐतिहासिक साहित्य रूपी यह ऐतिहासिक प्रमाण भारतीय संस्कृति रूप महा समुद्र में गोता लगाकर गुर्जर इतिहास रूपी मोतियों को खोजना है यह काम आसान नहीं है। इस काम के लिए हमें लंबी दूरी तय करनी है जो कोई किन्हीं निहित स्वार्थों को लेकर यदि समूह में सम्मिलित है तो उसे स्वयं को इस कार्य से विरक्त कर लेना चाहिए, क्योंकि यह कार्य निष्ठा और परिश्रम दोनों मांगता है। कुछ अनुचित लगे तो क्षमा प्रार्थी हूं। - मोहनलाल वर्मा, जयपुर

जीवन को बहुत नजदीक से देखना भी एक कला -प्रो. डॉ. लोपा

जो डॉक्टर लोपा ने देखा और अनुभव किया।

प्रोफेसर डॉ. लोपा मेहता, जो मुंबई के KEM मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर रहीं, एनाटॉमी डिपार्टमेंट की हेड थीं।

उन्होंने 78 साल की उम्र में Living Will बनाया, जब शरीर जवाब देने लगे और लौटने की कोई गुंजाइश न बचे, तब इलाज नहीं किया जाए। न वेंटिलेटर, न ट्यूब, न अस्पताल में बेवजह की दौड़। वो चाहती हैं कि आखिरी वक्त शांति से बीते, जहाँ इलाज की जिद नहीं, समझदारी हो।

डॉ. लोपा ने केवल ये दस्तावेज नहीं लिखा, एक शोध-पत्र भी प्रकाशित किया है, जिसमें मृत्यु को एक स्वाभाविक, समय-निर्धारित, जैविक प्रक्रिया के रूप में समझाया। उनका कहना है कि आधुनिक चिकित्सा मृत्यु को कभी स्वतंत्र रूप में देख ही नहीं पाई। वो मानती रही कि मौत हमेशा किसी बीमारी की वजह से होती है, और अगर बीमारी का इलाज हो जाए तो मौत टाली जा सकती है। लेकिन शरीर का विज्ञान इससे कहीं ज़्यादा गहरा है।

उनका तर्क है, शरीर कोई अनंत चलने वाला यंत्र नहीं है। यह एक सीमित प्रणाली है, जिसमें एक निश्चित जीवन-ऊर्जा होती है। यह ऊर्जा हमें किसी टंकी से नहीं, बल्कि सूक्ष्म शरीर के माध्यम से मिलती है। वही सूक्ष्म शरीर जिसे अनुभव तो हर कोई करता है, पर देखा नहीं जा सकता, मन, बुद्धि, स्मृति, और चेतना, इन्हीं से मिलकर बना है यह सिस्टम।

यह सूक्ष्म शरीर एक माध्यम है, जिससे जीवन-शक्ति आती है और पूरे शरीर में फैलती है। यही शक्ति शरीर को जीवित रखती है। यह नाड़ी, धड़कन, पाचन और सोचने की क्षमता, सब कुछ उसी के भरोसे चलता है। लेकिन यह शक्ति अनंत नहीं है। हर शरीर में इसकी एक निश्चित मात्रा होती है। जैसे किसी मशीन में फिक्स बैटरी हो, न ज़्यादा हो सकती है, न कम।

'जितनी चाभी भरी राम ने उतना चले खिलौना' टाइप।

डॉ. लोपा लिखती हैं कि जब शरीर में मौजूद इस ऊर्जा का अंतिम अंश खर्च हो जाता है, तो सूक्ष्म शरीर अलग हो जाता है। यही वो क्षण होता है, जब देह स्थिर हो जाती है, और हम कहते हैं 'प्राण निकल गया।'

यह प्रक्रिया न बीमारी से जुड़ी है, न किसी चूक से। यह शरीर की अपनी आंतरिक गति है, जो गर्भ में ही शुरू हो जाती है, और जब पूरी हो जाती है, तब मृत्यु होती है। इस ऊर्जा का व्यय हर पल होता रहता है एक-एक कोशिका, एक-एक अंग, धीरे-धीरे अपने जीवन की लंबाई पूरी करते हैं। और जब संपूर्ण शरीर का कोटा खत्म होता है, तब शरीर शांत हो जाता है।

मौत का समय कोई घड़ी से नापा गया क्षण नहीं होता। यह एक जैविक समय है, हर व्यक्ति के लिए अलग। किसी का जीवन 35 साल में पूरा होता है, किसी का 90 में। लेकिन दोनों ही अपनी पूरी इकाई जीते हैं। कोई अधूरा नहीं मरता, अगर हम उसे मजबूरी या हार न कहें।

डॉ. लोपा ने अपने लेख में ये भी कहा है कि आधुनिक चिकित्सा जब मृत्यु को टालने की जिद करती है, तो वो केवल शरीर नहीं, पूरे परिवार को थका देती है। ICU में महीनेभर की साँसें कभी कभी वर्षों की कमाई ले जाती हैं। रिश्तेदार कहते रह जाते हैं 'अभी उम्मीद है', पर मरीज की देह कब की कह चुकी होती है 'बस अब बहुत हो गया।'

इसीलिए उन्होंने लिखा है कि जब मेरा समय आए, तो बस KEM ले जाना। जहाँ मुझे भरोसा है कि कोई अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं होगा। इलाज के नाम पर खिंचाई नहीं की जाएगी। मेरे शरीर को रोका नहीं जाएगा जाने दिया जाएगा।

अब सवाल ये है,

क्या हम सबने अपने लिए ऐसा कुछ सोचा है?

क्या हमारा परिवार उस इच्छा का सम्मान करेगा?

क्या इच्छा का सम्मान करने वाला व्यक्ति समाज में सम्मान पा सकेगा?

क्या हमारे देश के अस्पतालों में ऐसी इच्छाओं की इज्जत बची है, या अब भी हर सांस पर बिल बनेगा, और हर मौत पर आरोप?

सब इतना आसान नहीं लगता है, तर्क और इमोशन का मैनेजमेंट शायद सबसे कठिन कामों में से एक है।

अगर मौत को एक नियत, शांत और शरीर के भीतर से तय प्रक्रिया की तरह देखना शुरू करें, तो शायद मौत से डर भी कम हो और डॉक्टर से उम्मीद भी थोड़ी सच्ची हो।

मुझे लगता है मौत से लड़ना बंद करना चाहिए, उससे पहले जीने की तैयारी करनी चाहिए। और जब वो आए तो शांति से, गरिमा से उसे जाने देना चाहिए। बुद्ध की भाषा में मौत एक प्रमोशन है। लेकिन क्या मेरी खुद की ये सोच 70 के बाद रह पायेगी? हम खुद ही नहीं जानते।

अनमोल वचन

तुम भगवान के चरणों में फूल चढ़ाने जाओ तो इस चक्कर में मत पड़ना कि कौन-सा फूल चढ़ाऊं? गुलाब का फूल चढ़ाऊं या चमेली का चढ़ाऊं? बस कोई भी फूल लेना और चढ़ा देना। दरअसल, फूल चढ़ाते समय केवल इतना ही विचार करना कि आदमी का जीवन फूल जैसा होना चाहिए। जीवन फूल जैसा कोमल होगा तो भगवान के चरणों और गले में भी जगह मिल सकती है। इतना ही नहीं, भगवान अपने सिर पर भी स्थान दे सकते हैं, बशर्ते कि हम फूल जैसे कोमल, सुंदर और सुगंधित बनें।

जयसिंहपुरा की मानवी गुर्जर का नेशनल हॉकी टीम में चयन

महमदपुर। जयसिंहपुरा गांव की बेटी मानवी गुर्जर ने अपने खेल कौशल से अब राष्ट्रीय मंच पर अपना नाम दर्ज कराया है। मानवी का चयन अंडर-14 राष्ट्रीय बालिका हॉकी टीम में हुआ, जो आने वाले दिनों में लखनऊ में होने वाली नेशनल हॉकी चैंपियनशिप में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेगी। मानवी के पिता भारतीय सेना में सेवारत है। अप्रैल माह में राज्य स्तरीय ट्रायल्स में उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन कर राजस्थान टीम में जगह बनाई। इसके बाद से वह अजमेर विशेष प्रशिक्षण शिविर में पन्द्रह दिन तक अभ्यास करती रहीं। कठिन परिश्रम, अनुशासन और आत्मविश्वास की बदौलत उन्होंने राष्ट्रीय स्तर की टीम में भी अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया। अब मानवी गुर्जर की हॉकी स्टिक से निकली हर चाल लखनऊ के मैदान में राजस्थान का नाम रोशन करेगी।

शब्द ब्रह्म

'शब्द ब्रह्म' एक गूढ़ और महत्त्वपूर्ण वैदिक अवधारणा है। यह संस्कृत का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है-

'शब्द' = ध्वनि या वाणी

'ब्रह्म' = परम सत्य, परम चेतना, ब्रह्माण्डीय सत्ता

अर्थ और व्याख्या :

'शब्द ब्रह्म' का तात्पर्य उस दिव्य ध्वनि या वाणी से है, जिसे ब्रह्म (परम तत्त्व) का स्वरूप या उसकी अभिव्यक्ति माना गया है। यह विचार वेदों और उपनिषदों में मिलता है, ख़ासकर नाद योग, वाक् तत्त्व और तंत्र परंपराओं में।

मुख्य बिंदु :

1. वेदों में - वेदों को अपौरुषेय (मनुष्य द्वारा न रचित) माना गया है। उन्हें 'श्रुति' कहा गया, अर्थात् जो श्रवण (श्रवण या सुनना) द्वारा प्राप्त होता है। वेदों की यह ध्वनि - नाद - ही शब्द ब्रह्म मानी जाती है।

2. वाक् के चार स्तर- हिन्दू दर्शन में वाणी के चार स्तर बताए गए हैं :

परा वाक् - ब्रह्म से जुड़ी, सर्वोच्च, सूक्ष्मतम ध्वनि

पश्यन्ती - विचार की अवस्था

मध्यमा - अंतर्चेतना में गूंजती वाणी

वैखरी - उच्चारित शब्द (हमारी सामान्य बोलचाल)

'शब्द ब्रह्म' मुख्यत: परा वाक् और पश्यन्ती के स्तर से संबंधित है।

3. 'शब्दो नित्य:' - मीमांसा दर्शन में यह विचार है कि शब्द शाश्वत (नित्य) हैं। शब्द स्वयं में सत्ता रखते हैं और ब्रह्म तक पहुंचने का माध्यम हैं।

4. नाद ब्रह्म- यह विचार कहता है कि नाद (आधि-सूक्ष्म ध्वनि, जैसे ॐ) ही ब्रह्म है।

5. 'नादो हि ब्रह्म' - ध्वनि ही ब्रह्म है।

आध्यात्मिक महत्त्व :

'ॐ' को 'शब्द ब्रह्म' का प्रतीक माना गया है।

ध्यान, मंत्र, जप आदि में 'शब्द' का प्रयोग आत्मा को ब्रह्म से जोड़ने के साधन के रूप में होता है।

गुरु परंपरा में 'शब्द' के द्वारा ज्ञान का संप्रेषण भी 'शब्द ब्रह्म' का ही कार्य है।

'शब्द ब्रह्म' को यदि दर्शन (Indian philosophy) के संदर्भ में देखें, तो यह अत्यंत गूढ़ और गम्भीर विषय बन जाता है। विभिन्न दर्शनों- विशेषत: पूर्व मीमांसा, वेदांत, और योग में 'शब्द' और 'ब्रह्म' की व्याख्या अलग-अलग दृष्टिकोणों से की गई है। नीचे इसके दर्शनशास्त्रीय पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है :-

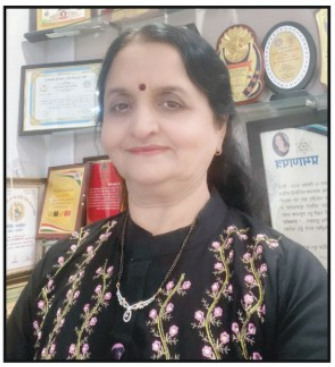

1. पूर्व मीमांसा दर्शन (ऋषि जैमिनी द्वारा रचित):

सिद्धांत: 'शब्दो नित्य:' - शब्द नित्य हैं।

मीमांसा दर्शन का मुख्य लक्ष्य वेदों के कर्मकांडों की व्याख्या करना है।

वेदों को अपौरुषेय (मनुष्य-निर्मित नहीं) माना गया है, इसलिए वेदों के शब्द शाश्वत (eternal) हैं।

'शब्द ब्रह्म' का अर्थ यहां यह है कि वेद का शब्द स्वयं ब्रह्मस्वरूप है- वह अंतिम प्रामाणिक सत्ता है।

वेद का उच्चारण, स्वर और क्रम में अद्भुत शक्ति है, इसलिए उसे यज्ञ में प्रयोग करने पर फल मिलता है।

यहाँ 'शब्द ब्रह्म' का तात्पर्य है- वेद का शब्द स्वयं एक दिव्य सत्ता है, और उसी के द्वारा धर्म और कर्म का ज्ञान प्राप्त होता है।

2. वेदांत दर्शन (विशेषत: अद्वैत वेदांत - शंकराचार्य)

सिद्धांत:- 'ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापर:'

अद्वैत वेदांत में 'ब्रह्म' को निर्गुण, निराकार, अचिन्त्य, और नित्य माना गया है।

'शब्द' को वहाँ ब्रह्म तक पहुँचने का साधन माना गया है, स्वयं ब्रह्म नहीं।

'ओंकार' (ॐ) को 'शब्द ब्रह्म' कहा गया है- वह एक प्रतीक है उस परम सत्ता का।

मुण्डक उपनिषद में कहा गया है :

'ओं इत्येतदक्षरं ब्रह्म' - यह ओंकार ही अक्षर ब्रह्म है।

ध्यान, जप, और श्रवण (वेद श्रवण) द्वारा शब्द ब्रह्म से

परब्रह्म का बोध हो सकता है।

यहाँ 'शब्द ब्रह्म' एक प्रारंभिक साधन है, जो साधक को निर्गुण ब्रह्म की अनुभूति की ओर ले जाता है।

3. योग दर्शन (पतंजलि)

सिद्धांत : 'ईश्वर प्रणिधानाद् वा' (योगसूत्र 1.23)

पतंजलि योगसूत्र में ईश्वर को विशेष पुरुष कहा गया है – जो क्लेश-कर्म-विपाक से रहित है।

इस ईश्वर का प्रतीक है – 'प्रणव' (ॐ), और इसका ध्यान करना मुक्ति की ओर ले जाता है।

योग में 'शब्द ब्रह्म' = ॐ की ध्वनि, जो ईश्वर का प्रत्यक्ष प्रतीक है।

जप और ध्यान के माध्यम से यह शब्द साधक को आत्मा से जोड़ता है।

> यहाँ 'शब्द ब्रह्म' मंत्रात्मक ध्वनि है, जो साधना के द्वारा आत्मबोध कराता है।

4. न्याय और वैशेषिक दर्शन में-

इन दर्शनों में शब्द को ज्ञान के साधन (प्रमाण) के रूप में माना गया है- जैसे प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आदि।

'शब्द ब्रह्म' की कोई विशेष रूप से आध्यात्मिक व्याख्या नहीं की जाती, परन्तु शब्द को एक प्रमाण (valid source of knowledge) के रूप में स्वीकार किया गया है।

सारांश (Essence) :

दर्शन : 'शब्द ब्रह्म' का अर्थ

मीमांसा : वेद का शब्द ही ब्रह्म है- शाश्वत, अपौरुषेय

अद्वैत वेदांत : 'शब्द ब्रह्म' साधन है- परम ब्रह्म तक पहुँचने का माध्यम

योग दर्शन : 'ॐ' ही ईश्वर का प्रतीक है- ध्वनि रूप में ब्रह्म न्याय/वैशेषिक 'शब्द' ज्ञान का प्रमाण है – ब्रह्म से नहीं जोड़ा गया।

– डॉ. दक्षा जोशी 'निर्झरा' अहमदाबाद, गुजरात

खुशखबरी : स्कूटी मिलने पर छात्राओं में दौड़ी खुशी की लहर

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा और विद्यार्थी कल्याण में अग्रणी है यूनिवर्सल ग्रुप ऑफ कॉलेजेज

वी बी जैन 9261640571 देव चेतना

महुवा। जगरौटी विमेंस कॉलेज खेड़ला बुजुर्ग महवा दौसा की 6 छात्राओं को कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना

के तहत स्कूटी मिलने पर महाविद्यालय परिवार की ओर से स्कूटी का पूजन कर तथा छात्राओं को मिठाई खिलाकर सम्मानित किया गया। छात्रा संजना कुमारी मीणा, क्षमा कुमारी मीणा, गुड़िया कुमारी मीणा, भारती कुमारी मीणा, प्रिया कुमारी मीणा, प्रतिभा सिंह जादौन को स्कूटी योजना का लाभ मिला। इस दौरान देखने को मिला कि सभी छात्राएं बड़ी खुश नजर आ रही थी। महाविद्यालय परिवार ने सभी छात्राओं का हार्दिक अभिनंदन और स्वागत किया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ मंजू सिंह, निदेशक डॉ. कुलदीप सिंह, एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी सपना कुमारी, ज्योतिषण यादव, सोनवीर चौधरी, बबलेश कटारा जगदीश सिंह, राजेंद्र सिंह मीणा, साधुराम, बाबू सिंह उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि जगरौटी विमेंस कॉलेज और यूनिवर्सल ग्रुप ऑफ कॉलेजेज में छात्र छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के साथ साथ जागरूक कर सरकार से मिलने वाली सभी योजनाओं का लाभ देने का भरपूर प्रयास किया जाता है। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्र के जगरौटी विमेंस कॉलेज और यूनिवर्सल ग्रुप ऑफ कॉलेजेज में भारी संख्या में छात्र छात्राएं पढ़ने के लिए प्राथमिकता देने में अग्रणी हैं।

देव चेतना पत्रिका के मुख्य संरक्षकगण

श्री आर.के. अग्रवाल
मुख्य संरक्षक

श्री बालाराम पोसवाल
मुख्य संरक्षक

प्रधान एम.सी. छोकर
गुर्जर समाज कल्याण परिषद, पंचकूला

श्री हरिनारायण बारवाल
जयपुर
मुख्य संरक्षक

वृद्धिचन्द गुर्जर
उपाध्यक्ष
राज. गुर्जर महासभा

श्री रवि लोमोड़
मुख्य संरक्षक

श्री बाछूराम डोई
जयपुर
मुख्य संरक्षक

श्री पदमसिंह कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री भँवरसिंह धाभाई
बीबासर-झुंझुनूं
मुख्य संरक्षक

देशराज गुर्जर
पारी, चित्तौड़
मुख्य संरक्षक

श्री देवनारायण धाभाई
मुख्य संरक्षक

गिर्राज पोसवाल
मुख्य संरक्षक

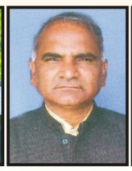
डॉ. रामकुमार सिराधना
मुख्य संरक्षक

श्री राम मणगस
मुख्य संरक्षक

श्री जीवनराम मावरी
मुख्य संरक्षक

श्री छीतरलाल कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री मुकेश सिन्धु
मुख्य संरक्षक

श्री संदीप नरसल
मुख्य संरक्षक

जगदीश लोहिया दिल्ली
मुख्य संरक्षक

श्री रामपाल फागणा
मुख्य संरक्षक

श्री चेतन डोई
मुख्य संरक्षक

श्री श्रवणलाल चाड़
मुख्य संरक्षक

श्री शंकरसिंह बजाड़
मुख्य संरक्षक

मनीष भरगड़
मुख्य संरक्षक

श्री रामफूल डोई
मुख्य संरक्षक

श्री शैतान सिंह अवाना
मुख्य संरक्षक

श्री अखिल अवाना
मुख्य संरक्षक

श्री महेन्द्र सिराधना
मुख्य संरक्षक

श्री नीमसिंह गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री देशराज चौहान
मुख्य संरक्षक

श्री दुष्यन्त सिंह तोमर
मुख्य संरक्षक

श्री रामधन चेची
मुख्य संरक्षक

श्री विनोद उमरवाल
मुख्य संरक्षक

श्री संजय सिंह गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री दिनेश कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री ओमप्रकाश जांगल
मुख्य संरक्षक

राजू अमावता
मुख्य संरक्षक

श्री मुकेश सुकल
मुख्य संरक्षक

श्री महेन्द्र सिंह चेची
मुख्य संरक्षक

श्री मंगल सिंह गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री नन्दलाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री श्रवण लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री नवरतन बारवाल
मुख्य संरक्षक

श्री राजेन्द्र फागणा
मुख्य संरक्षक

श्री प्रेमसिंह अवाना
मुख्य संरक्षक

श्री बीरबल प्रसाद
मुख्य संरक्षक

श्री ओमप्रकाश भड़ाना
मुख्य संरक्षक

श्री मंगलाराम खटाणा
मुख्य संरक्षक

श्री पुरुषोत्तम कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री सीताराम कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री राधेश्याम छावड़ी
मुख्य संरक्षक
न.पा.चेयरमेन-मण्डावा

श्री फूलचन्द बैंसला
मुख्य संरक्षक

डॉ. बी.एल. गोचर
मुख्य संरक्षक

श्री रामपाल सिंह लोमोड़
मुख्य संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह दांता
मुख्य संरक्षक

एडवोकेट शैलेन्द्र धाभाई
मुख्य संरक्षक

श्री मोतीलाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री शंकरलाल छावड़ी
मुख्य संरक्षक

श्री हनुमान गुर्जर गरणिया
मुख्य संरक्षक

श्री महेश धाभाई
मुख्य संरक्षक

श्री रामगोपाल गुर्जर नेकाड़ी
मुख्य संरक्षक

श्री लालचन्द आरोलिया
मुख्य संरक्षक

श्री रघुनाथ गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री एच.आर. कपासिया
फरीदाबाद, मुख्य संरक्षक

श्री रामधन डोई
जयपुर मुख्य संरक्षक

श्री प्रमोद तँवर
जयपुर मुख्य संरक्षक

श्री रामप्रकाश धाभाई
मुख्य संरक्षक

श्री कैलाश गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री विनोद कसाणा
मुख्य संरक्षक

महन्त मंगलनाथ जी
मुख्य संरक्षक

मोहनलाल सराधना
भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक

प्रकाश चन्द पोसवाल
सीकर, मुख्य संरक्षक

हरिराम डोई
मुख्य संरक्षक

श्री राजेन्द्र बसवा
मुख्य संरक्षक

श्री दुर्गाशंकर बारवाल
मुख्य संरक्षक

श्री त्रिभुवन सिंह पंवार
मुख्य संरक्षक

श्री उगमा राम गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री नानगराम कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री शंकर लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री देवेन्द्र सिंह गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री देवी लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री इन्द्रमल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री शंकर लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री गोपाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री हरीश चन्द्र भाटी
मुख्य संरक्षक

श्री मोहनलाल गुर्जर
रायड़ा, मुख्य संरक्षक

श्री लक्ष्मण गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री ललित गुर्जर चौहान
भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक

DEV CHETNA Pub. Date : 5 August, 2025 Postal Reg. No. IR/ JaipurCity/ 426/ 2025-27
RNI No. RAJHIN/2013/50503 Posted Date : 11th August, 2025

हमारे पूजनीय, प्रेरणास्त्रोत, जनसेवा के प्रतिमूर्ति, उदार हृदय और
समाज उत्थान के लिए सदैव समर्पित रहने वाले
गुर्जर समाज के प्रमुख समाजसेवी, हमारे प्रेरणास्रोत, मार्गदर्शक

स्व. सेठ श्री मूलचन्द चेची (कुट्टी वाले)

की 22वीं पुण्यतिथि पर
सभी परिवारजन की ओर से
दादाजी और दादीजी को
सादर नमन एवं
भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

स्व. सेठ श्री मूलचन्द चेची

स्व. श्रीमती मनभर देवी

आपका कर्मठ गरिमामय
व्यक्तित्व और जीवन सदैव
हमारा पथ प्रदर्शित
करने के साथ
जनसेवा और समाजसेवा के लिए
सदैव प्रेरित करता रहेगा।

श्रद्धावनत

समस्त चेची परिवार

सरदार सिंह चेची
(कुट्टी वाले)
जयपुर शहर जिलाध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा

रोहित सिंह चेची
(कुट्टी वाले)
प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष
राजस्थान गुर्जर महासभा
युवा प्रकोष्ठ
भाजपा मण्डल महामंत्री
जौहरी बाजार, जयपुर

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक **मोहन लाल वर्मा** के लिये स्काईटैक प्रिन्टर्स, 10, बोराज ठाकुर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं म.नं. 3714, कालों का मोहल्ला, कुन्दीगर भैरूं का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक : **मोहन लाल वर्मा**
मो. 9782655549 E-mail: devchetnanews@gmail.com